{ 6. }

पंचदेव

ज ग दी श प्र सा द म ण्ड ल सा हि त्य

सं. उमेश मण्डल

पंचदेव

पंचदेव

(जगदीश प्रसाद मण्डल साहित्य)

सं. उमेश मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN : 978-93-87675-83-4

दाम : ₹49/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

PANCHDEO : 6
Compilation by Umesh Mandal of Select Maithili Stories of Shri. Jagdish Prasad Mandal.

दू शब्द

पाँच गोट कथाक सङ्कलन, तँए पोथीक नाओं 'पंचदेव' राखल गेल अछि। 'पंचदेव'क एकसाए संग्रह अछि जे एकसंग प्रकाशित भऽ रहल अछि। साएओ संग्रहक कथा सभ श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ सङ्कलित कएल गेल अछि। मण्डलजी मैथिली-मिथिलाक ओहन रचनाकार छैथ, जनिक रचनामे वर्त्तमान अछि, यथार्थ अछि। तँए, भाषा-साहित्यक दुनियाँमे मण्डलजीकेँ सभठाम जानल-मानल जा रहल अछि।

मैथिली साहित्यमे उत्कृष्ट रचना तथा जीवन्त भाषाक प्रयोग हेतु मैथिली साहित्यक एकल अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार- 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड' श्री जगदीश प्रसाद मण्डलेजीकेँ प्रदान कएल गेलैन। तैसंग 'यात्री सम्मान', 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'विदेह बाल-साहित्य पुरस्कार', 'वैदेह सम्मान', तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सेहो सम्मानित छैथ। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक आइ धरिक (4 अक्टुबर 2018) कथा सभकेँ सङ्कलन करैत बेहद प्रसन्नता भऽ रहल अछि। ऐ हेतु कथाकारक आभारी छी।

संगे, आदरणीय श्री मन्त्रेश्वर झा, डॉ. शिवशंकर 'श्रीनिवास', श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र आ गजेन्द्र सर (श्री गजेन्द्र ठाकुर)जीक आभारी छी.! जनिक मार्ग दर्शन पाबि किछु-किछु कए रहल छी।

क्रमश: प्रो. धीरेन्द्र कुमार, डॉ. शिकुमार प्रसाद, श्री ओम प्रकाश झा, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री राजदेव मण्डल आ श्री दुर्गानन्द मण्डलजीक सेहो आभारी छी।

ऐ साएओ पोथीक रचनाकेँ पुस्तकाकार रूप देबए-मे श्री नन्द विलास राय, श्री राम विलास साहु आ श्रीमती पुनम मण्डलक भरपूर सहयोग भेटल, ई सभकियो प्रसंशाक प्रात्र छैथ। हिनका सबहक प्रति हम आभार प्रकट कए रहल छी। तैसंग, पूरक सहयोगीमे अपन तीनू सन्तान क्रमश: पल्लवी, तुलसी आ मानबक चर्च करब सेहो आवश्यक बुझि रहल छी। तीनू बच्चाकेँ धन्यवाद-आशीर्वाद।

आइ-काल्हिक भागम-भागकेँ देखैत अपने लोकनिक सुविधा लेल छोट-छोट पोथीमे श्री मण्डलजी-रचित छोट-पैघ सभ तरहक कथाकेँ जोड़ियेलौं हेन। आशा अछि अपने लोकैनकेँ नीक लागत। सादर...।

उमेश मण्डल

निर्मली

24 नवम्वर 2018

कथाक सत्तैर-

डुमैत जिनगी

डुमैत कारोबार देख झड़ीलाल डुमैत जिनगी जहिना ओछाइनपर पड़ल चारक कोरो-बत्ती लोक देखैत तहिना देख रहल छैथ। तड़पैत मन बेथित भऽ दुनियाँ निहारिते बुदबुदेलैन-

“एतेटा दुनियाँमे अपन किछु ने रहल!”

मुदा लगले मन ठमैक गेलैन। जिनगी तँ परती खेत जकाँ नै अछि जे जेतइसँ तेमहर जेबाक हुअए तेतइसँ तेमहर कोणा-कोणी रस्ता बना लिअ! जिनगीक तँ नाप अछि।

ओना, पचास बर्खक झड़ीलाल अखन धरि हारि मानैले तैयार नइ छला मुदा एकाएक मृत्युक समीप देख थर-थरा गेला। हारि नै मानैक कारण छेलैन जे जे गौरव गाममे केकरो नै देखै छला ओ अपनामे देखै छला। ओ छिऐन समैया फसिल जकाँ भिन्न-भिन्न नाओं। अनेको नाओंसँ अपन प्रतिष्ठा बनौने छैथ। कियो ‘वेपारी भाय’, तँ कियो ‘डॉक्टर भाय’, कियो ‘दिलीप भाय’ कहै छैन। मुदा स्त्रीगणक बीच ‘झड़-झड़हा’ नाओं चलै छैन! यएह छिऐन झड़ीलालक जिनगीक मान-प्रतिष्ठा...। मुदा जे हौउ, झड़ीलाल अपनाकेँ मेहनती वेपारी जरूर बुझै छैथ।

सालमे तीन-चारि जोड़ टुटल बरद सस्तामे आनि, दुनू परानी जमि

कऽ सेवा करै छैथ आ डेढ़िया-दोबरमे बेच अपना जीविकाक अधार बनौने छैथ। घुमै-फिरैबला छैथे तँए तीनू बेटीक बिआह तेहेन नजरिये केने छला जे कहियो भार नै बुझलैन।

अन्तिम खेप माने ऐ खेपमे ठका गेला। आठे दिन खुट्टापर बरद अनला भेलैन कि पाँचे दिनक बीच जोड़ो भरि बरद मरि गेलैन।

खुट्टापर पड़ल मुइल बरद लग बैसल दुनू परानी झड़ीलालक अक-वक बन्न। तरसैत मन कलपैत देवसुन्नैरक, जहिना रौद-पानि वा शीतमे सिताएल चिड़ै पाँखि फुरफुरबैए, तहिना मन फुरफुरेलैन-

“भगवान हाथक काज छीन लेलैन!”

पत्नीक बातक उत्तर झड़ीलालकेँ नै फुरलैन। फुरबो केना करितैन, जिनगीमे कहियो पहरनियाँ देवीक पूजा पहाड़पर चढ़ि नै केने छला। मुदा तैयो घिंघियाइत स्पष्ट उत्तर देलखिन-

“दुनियाँ बड़ीटा छै! एकटा काज छिनाएल तँ दोसर-तेसर-चारिम ताकि लेब।”

पतिक उत्तरसँ देवसुन्नैरकेँ झँपन-तोपन बरसाती सुरूज जकाँ आशाक किरिण फुटलैन, मुदा लगले फेर तोपा गेलैन...। बजली-

“काज-ले तँ लूरि चाही, से..?”

❑ साभार : बजन्ता-बुझन्ता

हूसि गेल

भोज खा बाबा अबिते रहैथ कि पोता–रमचेलबा–मन पड़लैन। तरखने देखलैन जे तीमन-तरकारीक मोटरी माथपर नेने दच्छिनसँ अबैए। रमचेलबाकेँ देखते बाबाक मन सहैम गेलैन जे सभ दिन पोताकेँ संग नेने जाइ छेलौं, आ... ।

लगले मनमे एलैन जे 'जे पूत हरवाहि करए गेल देव-पितर सभसँ गेल... ।' तैबीच हाथमे लोटा देख रमचेलबा लग आबि पुछि देलकैन-

"केतए गेल छेलह बाबा हौ?"

बाबा अवाक भऽ गेला ।मनमे उठलैन- आब तँ यएह सभ ने करत, तँए अनुकूल बना राखब जरूरी अछि। निधोख होइत बाबा बजला-

"बौआ, तूँ हाटपर गेलह आ एमहर बिझो भऽ गेलै तँ की करितौं?"

जहिना निधोख बाबा बजला तहिना रमचेलबा पुछलकैन-

"बनलह किने?"

बाबाकेँ मन पड़ि गेलैन पूर्वांचलक मणिपुरी भोज; जइमे जे वस्तु जेते नीक रहै छै ओ ओते पहिने परोसि खुऔल जाइए। मुदा अपना ऐठाम तँ अन्नकेँ अन्न बुझनिहार आगूमे आएल पहिल अन्नक पूजा करत... । बाबा बजला- "बौआ, नीक भेलौ जे तों नइ गेलेँ।"

अपन बात सुनि रमचेलबा पुछलकैन-

“से की हौ?”

अनुकूल होइत रमचेलबाकेँ देख बाबा कहलखिन-

“धुर! हूसा गेल।”

अकचकाइत रमचेलबा पुछि देलकैन-

“से की हौ?”

“की कहबौ, भात-दालि बड़ पवित्र बनल छेलै, तैपर अल्लू-परोरक तरकारी तेहेन बनल छेलै जे देखिए कऽ मन हलैस गेल। खूब खेलौं। तेकर पछाइत जे नीक-नीक विन्यास सभ आबए लगलै, ओकरा दिस केना तकितौं!”

“तब तँ खूब बनलह?”

“अपूछ भऽ गेल!”

❑ साभार : बजन्ता-बुझन्ता

ठेलाबला

टाबरक घड़ीमे बारह बजेक घण्टी बजिते भोलाक निन्न टुटि गेलैन। ओछाइनपर सँ उठि सड़कपर आबि हियासए लगला तँ देखलैन जे डण्डी-तराजू माथसँ थोड़बे पच्छिम झूकल अछि। मेघौन दुआरे सतभैयाँ झँपाएल। जेमहर साफ मेघ रहै ओम्हुरका तरेगन हँसैत मुदा जेमहर मेघौन रहै ओम्हुरका मलिन। गाड़ी-सवारी एक्कोटा नहि। सड़क सुनसान। मुदा बिजलीक इजोत पसरल। गस्तीक सिपाही टहलैत। सड़कपर सँ भोला आबि ओछाइनपर पड़ि रहला मुदा मन उचला-चाल करैत रहैन। सिनेमाक रील जकाँ पैछला जिनगी मनमे नचैत रहैन। जहिना चुल्हिपर चढ़ल बरतनक पानि तर-सँ-ऊपर अबैत तहिना भोलोक मनक खुशी हृदैसँ निकैल चिड़ै जकाँ अकासमे उड़ैत रहैन। किएक ने खुशी अबितैन, हेराएल वस्तु जे भेट गेल रहैन। मन गेलैन परसुका चिट्ठीपर, जे गामसँ दुनू बेटा पठौने। असम्भव काज बुझि बिसवासे नै होइत रहैन। पत्र तँ नइ पढ़ल होइत रहैन मुदा पढ़बै काल जे पाँति सभ सुनने छला से ओहिना आँखिक आगू नचैत रहैन। पत्र उघारि आँखि गड़ा देखए लगला-

“बाबू, पाँच तारीखकेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करए जाएब। इच्छा अछि जे घरसँ विदा होइ काल अहाँकेँ गोड़ लागि घरसँ निकली। तँए पाँच

तारीखकेँ दस बजेसँ पहिनहि अपने गाम पहुँच जाइ।”

पत्रक बात मनमे अबिते भोला गाम आ शहरक बीचक सीमानपर लसैक गेला। मनमे एलैन, समाजसँ निकैल छातीपर ठेला घिंच दूटा शिक्षक समाजकेँ देलिऐ, की ओइ समाजक आरो ऋण बाँकी अछि? जँ नहि तँ किएक ने छाती लगौता...।

जहिना गामसँ धोती गोल-गला आ दू टाका लऽ कऽ निकलल छेलौं, तहिना देहक कपड़ा, सनेस, चाह-पानक खर्च छोड़ि किछु ने ऐठामसँ लऽ जाएब...।

चिड़ै टाँहि देलकै, फेर ओछाइनपर सँ उठि भोला बाहर निकलला तँ देखलखिन जे बाँस भरि ऊपर भुरूकबा आबि गेल अछि। चोट्टे घुमि कऽ आबि संगी-साथीकेँ उठा अपन सभ किछु बाँटि देलखिन, अपना-ले खाली मासुलक खर्च, सनेस आ पाँकेट खर्च मिला साए रूपैआ रखि, कपड़ा पहिर, धरमशालाकेँ गोड़ लागि हँसैत निकैल गेला।

जहन आठे बर्खक भोला रहए तहिए माए मरि गेलैन। तीनिए मासक पछाइत पिता चुमौन कऽ लेलखिन। ओना, पहिलुको पत्नीसँ रघुनीकेँ चारिटा सन्तान भेल रहैन। मुदा खाली भोलेटा जीवित रहल। सतमाए-केँ परिवारमे एने भोलाकेँ सुखे भेलइ। ओना, गामक जनिजातियो आ पुरुखोकेँ होइ जे सतमाए भोलाकेँ अलबा-दोलबा कऽ घरसँ भगा देतै, नहि तँ परिवारमे भिनौज जरूर कराइए देतइ। मुदा सबहक अनुमान गलत भेल। भोला घरसँ सोलहन्नी फ्री भऽ गेल। फ्री खाली काजेटा मे भेला, मान-दान सेहो बढ़िए गेलइ। दुनू साँझ भानस होइते माए फुटा कऽ भोलाले सीकपर थारी साँठि कऽ रखि दइ छेली। भलेँ भोला दिनुका खेनाइ साँझमे आ रौतुका खेनाइ भोरमे खाइत।

परोपट्टामे जालिम सिंह आ उत्तमचन्दक नाच जोर पकड़ने। सभ गाममे तँ नाच पार्टी नहि, मुदा एक गाममे नाच भेने चरिकोसीक लोक

देखवए अबैत।

भोलाक गामक नाच पार्टी सभसँ सुन्दर अछि। जेहने नगेड़ा बजौनिहार तेहने बिपटा। जइसँ पार्टीक प्रतिष्ठा दिनानुदिन बढ़िते जाइत। ..घरसँ फ्री भेने भोला नाचक परमानेंट देखनिहार भऽ गेल। नाचो एक-आध घन्टा, दू घन्टा आकि तीन घन्टाक नहि, भरि रौतुका। जेहने देखनिहार जिद्दी तेहने नचिनिहारो। गामक बुढ़-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ छौड़ा-मारड़ि धरि भरि मन मनोरंजन करैत। मनोरंजनो सस्ता। ने नाच पार्टीकेँ रूपैआ दिअ पड़ैत आ ने खाइ-पीबैक कोनो झंझट। ओना, गामक बारह-चौदह-अना लोकक हालतो रद्दीए। मुदा जे किसान परिवार छल ओ अपना ऐठाम मासमे एक-दू दिन जरूर नाच करबै छला। नटुआकेँ खैयो-ले दइ छेलखिन आ कोनो-कोनो समानो कीनि कऽ। भोलो नाच पार्टीक अंग बनि गेल, डिग्री सेदैक जिम्मा भेट गेलइ। डिग्री सेदैक जिम्मा भेटते भोलाकेँ काजो बढ़ि गेलइ। घूर-ले जारनोक ओरियान करए पड़इ। अपना काजमे भोला मस्त रहए लगल। मुदा एतबेसँ ओकर मन शान्त नइ भेलइ। काजक सृजन ओ अपनोसँ करए लगल। स्टेजक आगूमे जे छोटका धिया-पुता बैस पीह-पाह करइ। ओकरो सभपर निगरानी करए लगल। आब ओ चुपचाप एकठाम नै बैसए। घुमि- घुमि कऽ महफिलोक निगरानी करए लगल। आरो काज बढ़ैलक। नटुआ सबहक बीड़ी सेहो लगबए लगल। बीड़ी सुनगबैत-सुनगबैत अपनो पीयब सीखि लेलक। किछुए दिनक पछाइत भोला नमहर बीड़ी-पियाक भऽ गेल। किएक तँ एक्के-दू दम जँ पीबए तैयो भरि रातिमे तीस-पैंतीस दम भऽ जाइ छेलइ। जइसँ भरि राति मूड बनल रहै छेलइ।

बीड़ीक कसगर चहैट भोलाकेँ लगि गेल। रातिमे तँ नटुए सभसँ काज चलि जाइ छेलै मुदा दिनमे जहन अमलक तलक जोर करै तँ मन छटपटाए लगइ, मूडे भडैठ जाइ। मूड बनबै दुआरे भोला बापक राखल बीड़ी चोरा-चोरा पीबए लगल। जइक चलैत सभ दिन किछु-ने-किछु

बापक हाथे मारि खाइत।

एक दिन एक्केटा बीड़ी रघुनीकेँ रहैन। भोला चोरा कऽ पीब लेलक। कोदारि पाड़ि रघुनी गामपर एला तँ बीड़ी पीबैक मन भेलैन। खोलियासँ आनए गेला तँ बीड़ी नइ देखलैन। चोटपर भोला पकड़ा गेल। सभ तामस रघुनी भोलापर उतारि लेलैन। ..मारि खाए भोला कनैत उत्तर-मुहेँक रस्ता पकड़लक। कनीए आगू बढ़ल कि करिया कक्काक नजैर कनैत भोलापर पड़ल। कानबसँ ओ बुझि गेला जे भीतरिया मारि लागल छइ। ..पुचुकारि कऽ करिया काका पुछलखिन-

"की भेलौ भोला, किए हुचकै छँह?"

करिया कक्काक सिनेह पाबि भोला आरो हुचैक-हुचैक कानए लगल। हुचकैत भोला जे किछु काकाकेँ कहलकैन ओ हुचकीए-मे हेरा गेल। काका भोलाक बात नै बुझलैन। मुदा काका बिगरला नहि, भोलाक दहिना डेन पकैड़ रघुनीकेँ कहए बढ़ि गेला।

काकाकेँ देख रघुनियोँक मन पघिल गेलैन। लगमे आबि काका कहलखिन-

"रघुनी, भोला बच्चा अछि किएक तँ बिआह नइ भेलैए। तँए नीक हेतह जे बिआह करा दहक। अपन भार उतैर जेतह। परिवारक बोझ पड़तै अपने सुधरत। अखन मारने दोषी हेबह, समाज अबलट्ट जोड़तह जे बाप कुभेला करै छइ। जनिजातिक मुँह रोकि सकबहक ओ कहतह जे 'माए मुइने बाप पित्ती... ।"

करिया कक्काक विचार रघुनीक करेजकेँ छेदि देलकैन। आँखिमे नोर आबि गेलैन। अखन धरि रघुनीक जे आँखि करिया कक्कापर रहैन ओ भोलाक गाल परहक सुखल नोरक टघारपर पहुँच अँटैक गेलैन। ओना, मारिक चोट भोलाक देहमे निजाइए गेलै जे संग-संग बिआहक बात सुनि मनमे खुशियो उपकलै। बुधिक हिसाबसँ भलेँ भोला बुड़िबक अछि मुदा

नाचमे मेल-फीमेलक गीत तँ गबिते अछि।

पिताक हैसियतसँ रघुनी करिया काकाकेँ कहलखिन-

“काका, हम तँ ओते छह-पाँच नै बुझै छिऐ, काल्हिए चलह केतौ लड़की ठेमा कऽ बिआह कैये देबइ।”

“बड़बढ़ियाँ।”

कहि करिया काका रस्ता घेलैन।

भोलाक बिआह भेला आठे दिन भेल छेलै कि पाँच गोरेक संग समैध आबि रघुनीकेँ कहलकैन-

“बिआहसँ पहिने हम सभ नै बुझलिऐ, परसू पता लगल जे लड़िका नाच पार्टीमे रहैए। नटुआ-फटुआ लड़िकाक संग अपन बेटीकेँ हम नै जाए देब। ई सम्बन्ध नइ रहत। अपना सभमे तँ खुजले अछि। अहूँ अपन बेटाकेँ बिआहि लिअ आ हमहूँ अपना बेटीक दोसर बिआह कऽ देब।”

कहि पाँचो गोरे चलि गेला।

ससुरक बात सुनि भोलाक बुधिए हेरा गेलइ। जहिना जोरगर बिर्ड़ो उठलापर सभ किछु अन्हरा जाइ छै तहिना भोलोक मन अन्हराए लगलै, दुनियाँ अन्हार लागए लगलै। ओना, तीन मास पहिनहि नाच पार्टी टुटि गेल छेलइ। एकटा नटुआ एकटा लड़कीकेँ लऽ पड़ा गेल जइसँ गाम दू फाँक भऽ दू ग्रुपमे बँटा गेलइ। सौंसे गाममे सनासनी चलए लगलै। तैपर सँ भोला आरो दू फाँक भऽ गेल। पाण्डु रोगी जकाँ भोलाक देहक खून तरे-तर सुखए लगलै। मुदा की करैत वेचारा। किछु फुरबे ने करइ। ग्लानिसँ मन कसाइन हुअ लगलै। मने-मन अपनाकेँ धिक्कारए लगल, कोन सुगराहा भगवान हमरा जन्म देलैन जे बहुओ छोड़ि देलक। विचारलक जे ऐ गामसँ केतौ चलिए जाएब नीक हएत।

घरसँ भोला पड़ा गेल। संगी-साथीक मुहसँ दिल्ली, कलकत्ता, बम्बइक विषयमे सुननहि रहए। जइसँ गाड़ियोक भाँज बुझले रहइ। मुदा

ने जेबीमे पाइ रहै आ ने बटखर्चा। खाली दूटा टाका संगमे रहइ। अबधारि कऽ भोला कलकत्ताक गाड़ी पकैड़ लेलक।

हबड़ा स्टेशन गाड़ी पहुँचते भोला उतरल। टिकट नइ रहनौं एक्को मिसिया डर मनमे नहि। निर्मली-सकरीक बीच कहियो टिकट नै कटबै छल। एक बेर पनरह अगस्तकेँ सिमरिया धरि बिनु टिकटे घुमि आएल छल। प्लेटफार्मक गेँटपर दूटा सिपाहीक संग टी.टी. टिकट ओसुलैत। भोलाकेँ देख टी.टी.क मनमे भेलै, दरभंगिया छी भीख मंगए आएल अछि। टिकट नै मंगलकै। सिपाहियोकेँ बुझि पड़लै जे जेबीमे किछु छै नहि। टिकटेबला यात्री जकाँ भोलो गेँट पार भऽ गेल।

सड़कपर आबि भोला आँखि उठा कऽ तकलक तँ नमहर-नमहर कोठा, चौरगर सड़क, हजारो छोटका-बड़का गाड़ी आ लोकक भीड़ देखलक। मनमे भेलै, भरिसक आँखिमे ने किछु भऽ गेल! जहिना आँखि गड़बड़ भेने एक्के चान सातटा बुझि पड़ैए तहिना ने तँ बुझि पड़ैए! ..दुनू हाथे दुनू आँखि मीड़ि फेर देखलक तँ ओहिना भीड़ देख मनमे उठलै, जहन एते लोकक गुजर-बसर चलै छै तँ हमर किए ने चलत। आगू बढ़ि लोकक बोली अकानए लगल। मुदा केकरो बाजब बुझबे नै करैत। अखन धरि बुझैत जे जहिना गाए-महींस सभठाम एक्के रंग बजैए तहिना ने मनुखो बजैत हएत। मुदा से नइ देख भेलै जे भरिसक हम मनुखक जेरिमे हेरा ने तँ गेलौं..! मुदा फेर मनमे उठलै, लोक तँ संगीक बीच हेराइए, असगरमे केना हेराएत।

..विचित्र स्थितिमे भोला पड़ि गेल। ने आगू बढ़ैक साहस होइ आ ने केकरोसँ किछु पुछैक। हिया हारि उत्तर-मुहेँ विदा भऽ भेल। सड़कक किनछैर सभमे खाइ-पीबैक छोट-छोट दोकान पतियानी लागल देखलक। भूख लगले रहै मुदा खाली जेबी आ लोकक बोलक कारण हिम्मते ने होइ। जेबी टोबलक तँ एकटा दू-टकही रहइ। मन पड़लै मधुबनीक स्टेशन कातक होटल, जइमे पाँच रूपैए प्लेट दइत। ई तँ

सहजे कलकत्ता छी। ऐठाम तँ आरो बेसी महग हेबे करत। एकटा दोकानक आगूमे ठाढ़ भऽ गर अँटबए लगल जे नइ भात-रोटी तँ एक गिलास सतुए पीब लेब। ..बगे देख दोकानदारे कहलकै-

"आबह आबह, बौआ। ठाढ़ किएक छह?"

अपन बोली सुनि भोला घुसैक कऽ दोकान लग पहुँच पुछलक-

"दादा, केना खुआबै छहक?"

"तीन मास पहिने धरि आठे-अनामे खुअबै छेलिऐ। अखन बारह-अनामे खुअबै छिऐ।"

भोलाक मनमे संतोख भेलइ। पाइएबला गहिंकी जकाँ बाजल-

"कुर्रा करैले पानि लाबह।"

भरि पेट खेनाइ खा भोला आगू बढ़ल। ओना, तँ रंग-बिरंगक वस्तु देखैत मुदा भोलाक नजैर खाली दुइए-ठाम अँटकै। देबाल सभमे साटल सिनेमाक पोस्टरपर आ सड़कपर चलैत ठेलापर। जइ पोस्टरमे डान्स करैत देखए ओइठाम अँटैक सोचए जे ई नर्तकी मौगी छी आकि मुनसा। गाम-घरमे तँ पुरुखे मौगी बनि डान्स करैए। फेर मन पड़लै संगीक-मुहेँ सुनल ओ बात जे कहने रहैए सत्य हरिश्चन्द फिल्ममे मर्दे मौगियोक रौल केने रहए...।

गुनधुन करैत भोला बढ़ल तँ अपने जकाँ छौड़ाकेँ ठेला ठेलने जाइत देख सोचए लगल, ई काज तँ हमरो बुते भऽ सकैए। गाड़ीक डरेवरी तँ करल नै अबैए। बिनु सिखने रिक्शो केना चलौल हएत। ततमत करैत आगू बढ़ल। सड़कक बगलेमे एकटा ठेलाबलाकेँ चाह पिबैत देखलक। ओइठाम जा कऽ ठाढ़ भऽ गेल। चाह पीब ठेलाबला पुछलक-

"कोन गाँ रहै छह?"

भोला बाजल- "बिशौल।"

‘बिशौल’सुनिते ठेलाबला कहलकै-

“हमहूँ तँ सुखेते रहै छी, चलह हमरा संगे।”

गप-सप्प करैत दुनू गोरे धरमतल्लाक पुरना धरमशाला लग पहुँचल, ठेलाकेँ सड़केपर छोड़ि दीनमा भोलाकेँ धरमशालाक भीतर लऽ जा कऽ कहलक-

“समांग, असगरे केतौ जैहह नहि। हेरा जेबह। एतै रहह, ताबे हम एक ट्रीप मारने अबै छी।”

टंकीपर हाथ-पएर धोइ भोला दीनमासँ बीड़ी मांगि पीब, पीलर लगा ओङैठ कऽ बैस रहल। आँखि उठा कऽ तकलक तँ झड़ल-झुरल देबालक सिमटी, तैपर केतौ-केतौ बर-पीपरक गाछ जन्मल देखलक। पैखाना कोठरी आ पानिक टंकीक आगूमे ठेहुन भरि थाल किचार सेहो देखलक, मन पड़लै गाम। नाच-पार्टी टुटि गेल! घरवाली छोड़ि देलक! दू पाटी गाम भऽ गेल! सोचिते-सोचिते भोलाकेँ निन्न आबि गेलइ। बैसले-बैसल सुति रहल।

गोसाँइ डुमिते बुचाइ (दोसर ठेलाबला) आबि भोलाकेँ जगबैत पुछलक-

“कोन गाम रहै छह?”

आशा भरल स्वरमे भोला बाजल-

“बिशौल।”

बिशौलक नाओं सुनिते मुस्कियाइत बुचाइ पुछलकै-

“रूपनकेँ चिन्है छहक?”

“उ तँ हमरा कक्के हएत।”

अपन भाइक ससुर बुझि भोलासँ सार-बहनोइक सम्बन्ध बनबैत बाजल- “चलू, पहिने चाह पीबी। तहन निचेनसँ गप-सप्प करब।”

कहि टंकीपर जा बुचाइ देह-हाथ धोइ, कपड़ा बदैल भोलाकेँ संग केने दोकानपर गेल। आँखिक इशारासँ दोकानदारकेँ दू-दूटा पनितुआ, दू-दूटा समौसा दइले कहलक। दुनू गोरे खा, चाह पीब पानक दोकानपर पहुँच बुचाइ दूटा पान मंगलक। 'पान' सुनि भोला बाजल-

"पान छोड़ि दियौ, बीड़ीए कीनि लिअ।"

बीड़ी पिबैत दुनू गोरे धरमशालाक भीतर पहुँचल। समय भेने एका-एकी ठेलाबला सभ आबए लगल। बिशौलक नाओं सुनिते अपन-अपन सम्बन्ध सभ फरिछौलक। सम्बन्ध स्थापित होइते बेरा-बेरी चाह चलए लगलै। चाह पिबैत-पिबैत भोलाक पेट अगिया गेल। अखन धरिक जिनगीमे एहेन सिनेह भोलाकेँ पहिल दिन भेटलै। भेला ठेलाबला सबहक परिवारक अंग बनि गेल। सभ बेवस्था ठेलाबला सभ कऽ देलक। दोसर दिनसँ ठेला ठेलए लगल।

शनि दिनकेँ सभ ठेलाबला रौतुका शो सिनेमा देखए जाइत। ओइ शोमे एक क्लासक कन्सेशन भेटइ। भोलो सभ शनिकेँ सिनेमा देखए लगल।

चौदह मास बीतला पछाइत भोला गाम आएल। नव चेहरा नव विचार भोलाक। घरक सभ सदस-ले कपड़ा अनलक। धिया-पुताकेँ दू-दूटा चौकलेट देलक। धिया-पुताक हाथमे चौकलेट देख एका-एकी जनिजातियो सभ आबए लगली। झबरी दादी सेहो एली। भोलाकेँ देखते झबरी दादी बाजए लगली-

"कहू तँ ऐसँ सुन्नर पुरुख केहेन होइ छै जे सौंथ जरौनियाँ छोड़ि देलकै!"

दादीक बात भोलाकेँ बेधि देलक। आँखि नोराए लगलै। रघुनीक मन सेहो कानए लगलै। दोसरे दिन रघुनी लड़की ताकए घरसँ निकलल। ओना, लड़कीक तँ कमी नहि, मुदा गाम-घर देख कऽ कुटुमैती करैक

विचार रघुनीक मनमे रहैन। लड़कीक कमी तँ ओइ समाजमे अधिक अछि जइमे भ्रूण-हत्याक रोग धेने छइ। समैयो बदलल। गिरहस्त परिवारसँ अधिक पसिन लोक नोकरिया परिवारकेँ करैए। बगलेक गाममे भोलाक बिआह भऽ गेल।

बिआहक तीनिए दिनक पछाइत कनियाँक बिदागरियो भऽ गेलै आ पाँचमे दिन भोला कलकत्तो चलि आएल। सालक एगारह मास भोला कलकत्ता आ एक मास गाममे गुजारए लगल। गाम अबैत तँ अपनो घरक काज सम्हारि अनको सम्हारि दइत। तेसर साल चढ़िते भोलाकेँ जौंआँ बेटा भेलइ। नवम् मास चढ़िते भोला गाम आबि गेल। मनमे आशो बनले रहै जे पाइ-कौड़ीक दिक्कत तँ नहियेँ हएत। सभ ठेलाबला अपन संस्था बना पाइ-कौड़ीक प्रबन्ध केने अछि। मुदा पहिल बेर छी, कनियाँक देखभाल तँ कठिन अछिए। सरकारीक कोनो बेवस्थो नहियेँ छइ। मुदा समाजो तँ समुद्र छी, जेतए बिनु कहनौं सेवा भेटैए। जइसँ भोलोकेँ कोनो बेसी परेशानी नहियेँ भेल।

समय आगू बढ़ल। पाँच बर्ख पुरिते भोला दुनू बेटाकेँ स्कूलमे नाओं लिखौलक। शहरक वातावरणमे रहने भोलोक विचार धिया-पुताकेँ पढ़बै दिस झुकि गेल रहइ। मनमे अरोपि लेलक जे भलेँ खटनी दोबर किएक ने बढ़ि जाए मुदा दुनू बेटाकेँ जरूर पढ़ाएब। अपन आमदनी देख पत्नीक ऑपरेशनो कराइए नेने रहए। जइसँ परिवारो समटले रहइ।

पढ़ैमे जेहने चन्सगर रतन तेहने लाल। क्लासमे रतन फस्ट करैत आ लाल सेकेण्ड। सतमा क्लास धरि दुनू भाँइ फस्ट-सेकेण्ड स्कूलमे करैत रहल। हाइ स्कूलमे दुनू भाँइ आर्ट लऽ पढ़ए लगल जइसँ क्लासमे कोनो पोजीसन तँ नहियेँ होइत मुदा नीक नम्बरसँ पास करए लगल।

मैट्रिकक परीक्षा दऽ दुनू भाँइ कलकत्ता गेल। अखन धरि आने परदेशी जकाँ अपनो पिताकेँ बुझै छल, तँए मनमे रंग-बिरंगक इच्छा

संयोगने कलकत्ता पहुँचल रहए। मुदा पिताक मेहनत, छाती बले ठेला घीचैत देख पराते भने गाम घुमैक विचार दुनू भाँइ कऽ लेलक। पितेक जोरपर तीन दिन अँटकल। मुदा किछु किनैक विचार छोड़ि देलक। मेहनतक कमाइ देख अपन इच्छाकेँ मनेमे दुनू भाँइ दाबि लेलक। मुदा तैयो भोला दुनू बेटाकेँ फुलपेन्ट, शर्ट, घड़ी, जुत्ता कीनि देलखिन। तीन मासक पछाइत मैट्रिकक रिजल्ट निकलल। दुनू भाँइ, रतनो आ लालो प्रथम श्रेणीसँ पास केलक। फस्ट डिवीजन भेलोपर आगू पढ़ैक विचार मनमे नै अनलक। उपार्जन-ले सोचए लगल। नोकरीक भाँज-भुँज लगबए लगल। नोकरियो सबहक तँ वएह हाल। गामक-गाम पढ़ल बिनु पढ़ल नौजवानक फौज तैयार अछि। एक काज-ले हजार हाथ तैयार अछि। जइसँ समाजक मूल पूजी, मानवीय पूजी आगिमे जरैत सम्पैत जकाँ नष्ट भऽ रहल अछि।

समय मोड़ लेलक। पढ़ल-लिखल नौजवान-ले नोकरीक छोट-छीन दरबज्जा खुजल। गामक स्कूलमे शिक्षा-मित्रक बहाली हुअ लगलै। जइसँ नव ज्योतिक संचार गामोक पढ़ल लिखल नौजवानमे भेल। ओना, समैयक हिसाबसँ शिक्षा मित्रक मानदेय मात्र खोराकी भरि अछि मुदा बेरोजगारीक हिसाबसँ तँ नीक अछिए। बगलेक गामक स्कूलमे रतनो आ लालोक बहाली भऽ गेलइ। पाँच तारीककेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करत।

आगू नहि पढ़ैक दुख जेते दुनू भाँइक मनमे रहै तइसँ बेसी खुशी नोकरीसँ भेलइ। ओना, कोँपर सन बुधिमे कलुषताक मिसियो भरि आगमन नइ भेल छल। तथापि दुनू भाँइ बैस कऽ अपन परिवारक सम्बन्धमे सोचए-विचारए लगल। रतन लालकेँ कहलक-

“बौआ, कोन धरानी बाबू अपना दुनू भाँइकेँ पढ़ौलैन से तँ देखले अछि। अपनो सभ एक सीमा धरि पहुँच गेल छी, तँए अपनो सबहक की दायित्व बनैए से तँ सोचए पड़तह?”

रतनक बात सुनि लाल बाजल-

“भैया, अपना सभ ओइ धरतीक सन्तान छी जइ धरतीपर श्रवण कुमार सन बेटा भऽ चुकल छैथ। पाँच तारीखसँ पहिने बाबूकेँ कलकतासँ बजा लहुन। हम सभ ठेलाबलाक बेटा छी, ऐमे कोनो लाज नै अछि। मुदा लाजक बात तहन हएत जहन ओ ठेला घिंचता आ अपना सभ कुरसीपर बैस दोसरकेँ उपदेश देबइ।”

मुड़ी डोला स्वीकार करैत रतन बाजल-

“आइए बाबूकेँ चिट्ठी खसा दइ छिऐन जे पढ़िते गाड़ी पकैड़ घर चलि आउ। पाँच तारीखकेँ दुनू भाँइ ज्वाइन करए जाएब। दुनू भाँइक विचार अछि जे अहाँकेँ गोड़ लागि घरसँ डेग उठाएब।”

दुनू भाँइक विचार सुनिते माइक मन सुख-दुखक सीमानपर लसैक गेलैन। जरल घराड़ीपर चमकैत कोठा देखए लगली। आँखिमे नोर छिलैक एलैन। मुदा ओ दुखक नै सुखक...।

❑ साभार : गामक जिनगी

जीविका

शिवरातिक प्रात। मध्य मास। डेढ़ मासक शीतलहरीमे सुरूज मरनासन्न भऽ गेल छला मुदा जीबैक नव शक्ति आबि गेलैन। तँए रौदमे धीरे-धीरे गरमी आबए लगल। चारि बजे भोरमे उमाकान्तक नीन टुटल। निन्न टुटिते देबाल घड़ीपर नजैर देलक। चारि बजैत। ओछाइनेपर पड़ल-पड़ल उमाकान्त अपन आगूक जिनगी दिस देखए लगल। ओना, काल्हिए दिनमे दुनू मित्र विचारि नेने छल जे दुनू गोरे टेम्पू कीनए भोरुके गाड़ीसँ दरभंगा जाएब। बदलैत जिनगीक संकल्प उमाकान्तक मनमे, किएक तँ जिनगी मनुखकेँ किछु करैले भेटैए। मनमे एलै, पाँच-पचपनमे गाड़ी अछि तँए पाँच बजे घरसँ निकलब। ओना, अदहे घन्टाक रस्ता स्टेशनक अछि, मुदा किछु पहिनहि पहुँचब नीक। हलाँकी, कहियो कोनो गाड़ी अपना समयपर नहियेँ अबैए, एकाध घन्टा लेट रहिते अछि मुदा तइसँ हमरा की। हम समयपर जाएब। शुभ काज हरिदम समयसँ पहिनहि करैक कोशिश करक चाही। ..एते बात मनमे अबिते उमाकान्त ओछाइन छोड़ि उठि गेल। उठिते मनमे एलै, हमर ने नीन टुटि गेल मुदा जँ दोसक नीन नै टुटल होइ तहन तँ गड़बड़ हएत। से नहि तँ पर-पैखाना जाइसँ पहिने ओकरो जा कऽ उठा दिऐ। फेर मनमे एलै, दतमैन करिते जाएब, एकटा काजो तँ अगुआएल रहत। ..हाथमे दतमैन लइते

उमाकान्तकेँ मनमे एलै, किछु खा-पी कऽ घरसँ निकलब। रस्ता-बाटक कोन ठेकान। तहूमे लोहा-लक्कड़क सवारी। करवन नीक रहत करवन बगैद जाएत तेकर कोन ठेकान। एक बेर अहिना भेल रहए किने। दरभंगे जाइत रही, मनीगाछी लोहनाक बीच रेलक इंजिन खराब भऽ गेलइ। भोरुके गाड़ी, तँए सोचने रही जे दरभंगे पहुँच किछु खाएब-पीब। ले-बलैया! दू बजे तक गाड़ी ओतै अँटैक गेल! करवनो गाड़ीक डिब्बामे जा बैसी तँ करवनो उतैर कऽ इंजिन लग पहुँच ड्राइवरकेँ पुछिऐ। ओहू वेचाराक मन घोर-घोर भेल रहइ। हमहूँ आशा-बाटीमे रहि गेलौं। से जँ पहिने बुझितिऐ तँ गाड़ी छोड़ि बिदेसर चौकपर चलि जइतौं आ बस पकैड़ सबेर सकाल दरभंगा पहुँच जइतौं। सेहो नै केलौं। तेकर फल भेल जे भूखे-पियासे खूब टटेलौं। तँए, बिनु किछु मुँहमे देने घरसँ नै निकलब। ..ई बात मनमे अबिते उमाकान्त पत्नीकेँ उठबैत कहलक-

"जाबे हम दोस ऐठामसँ अबै छी, ताबे अहाँ चारिटा रोटी आ अल्लूक भुजिया बना लेब।"

कहि उमाकान्त शोभाकान्तक ऐठाम दतमैन करैत विदा भेल। दाँतमे घुस्सो दिअए आ मने-मन विचारबो करए, काजे एहेन छी जे मनुखकेँ मनुखो बनबैए आ जानवरो। ओना, दुनियाँक सभ मनुख तँ किछु-ने-किछु करिते अछि। मुदा कियो देव बनि जाइए तँ कियो दानव। तँए काजकेँ परखब सभसँ मूल बात छी...।

शोभाकान्त ऐठाम पहुँचते उमाकान्त रस्तेपर सँ बोली देलक-

"दोस छैँ रौ, रौ दोस?"

ओछाइनपर सँ उठैत शोभाकान्त बाजल-

"हँ दोस, छिऐ रौ, हमरो नीन टुटले अछि। अखन तँ अन्हारे छइ।"

उमाकान्त- "सबा चारि बजै छइ। तैयार होइत-होइत पाँच बजिए

जाएत। कनी पहिले स्टेशन जाएब।”

उमाकान्त आ शोभाकान्त एक्के बतारी। दुनूमे उमेरक हिसाबसँ के छोट आ के पैघ, से तँ ने अपने दुनू गोरे बुझए आ ने कियो टोले-पड़ोसक। किएक तँ टिप्पैन दुनूमे सँ केकरो नहि। बच्चेसँ दुनू गोरे बेसी काल एक्केठाम रहैत तँए समाजोक लोक बिसैर गेल। दुनू गोरेक माइयो-बाप मरिये गेल, आन मोने किएक राखत। मुदा दुनू गोरे ऐ मौकाक लाभ उठबैत। लाभ ई उठबैत जे दुनू एक-दोसराक स्त्रीसँ हँसी-चौल करैत। तइले दुनूमे सँ केकरो मलाल नहि। मुदा गामक बुढ़ो-बुढ़ानुस आ नवकियो कनियाँ, दुनू स्त्रीगणकेँ निरलज कहैत। किन्तु तेकर गम दुनूमे सँ केकरो नहि। किएक तँ सभ स्त्रीगणकेँ होइत जे अधिक-सँ-अधिक पुरुखक संग गप-सप्प-हँसी-मजाक हुअए।

बच्चेसँ उमाकान्त आ शोभाकान्त एक्केठाम गुल्लियो-डण्टा खेलए आ गामेक स्कूलमे पढ़बो करए। बच्चामे दुनू गोरे दुनूकेँ नामे धऽ-धऽ बजैत। मुदा चेष्टगर भेलापर, कनगुरिया ओंगरीमे ओंगरी भिरा दोस्ती लगा लेलक। मिडिल तक गामेक स्कूलमे संगे पढ़बो केलक। मुदा हाइ स्कूलमे उमाकान्तेटा नाओं लिखेलक। शोभाकान्त गरीब, तँए पढ़ाइ छोड़ि देलक। मुदा उमाकान्तकेँ दू-तीन बीघा खेतो आ पितो गामेक स्कूलमे नोकरी करैत। ओना, शोभाकान्त उमाकान्तसँ बेसी चरफरो आ पढ़ैयोमे नीक। तँए अपना क्लासक मेटगीरी सेहो करैत। मुनीटरक बात शिक्षको अधिक मानैथ आ चट्टियाक बीच धाखो। ..पढ़ाइ छोड़ला पछाइत शोभाकान्त नोकरी करए पटना गेल। गामसँ तँ यएह सोचि निकलल जे जएह काज भेटत सएह करब। मुदा रस्तामे विचार बदैल गेलइ। विचार ई बदललै जे ने चाहक दोकानमे नोकरी करब आ ने होटलमे, ने कोठीमे काज करब आ ने ताड़ी-दारूक दोकानमे। अगर जँ नोकरी नै हएत तँ रिक्शे चलाएब वा मोटिये-मे काज करब। सरकारी नोकरीक तँ कोनो आशे नहि, किएक तँ उमेरो नइ भेल हेन।

गामसँ शहर शोभाकान्त पहिले-पहिल पहुँचल। मुदा जे आकर्षण शहर-बजार देख लोककेँ होइ ओ आकर्षण शोभाकान्तकेँ नइ भेलइ। जहिना सोना-चानीक दोकान दिस गरीबक नजैर नै पड़ैए, तहिना। स्टेशनसँ उतैर शोभाकान्त उत्तर-मुहेँक रस्ता धेलक। कोठा-कोठीपर नजैर पड़बे ने करइ। किछु दूर गेलापर एकटा साइकिल मिस्त्रीक दोकान देखलक। रस्तापर ठाढ़ भऽ दोकान हियासए लगल। दोकानदारोक नजैर पड़लै। शोभाकान्तपर नजैर पड़िते दोकानदारक मनमे एलै जे छोटो-छोटो काजमे अपने बरदा जाइ छी जइसँ नमहर काज पछुआ जाइए। से नहि तँ ऐ बच्चाकेँ पुछिऐ जे नोकरी रहत। जँ रहत तँ रखि लेब। ..हाथक इशारासँ हाक पाड़ि मिस्त्री पुछलक-

"बाउ, की नाओं छी?

"शोभाकान्त।"

"केतए घर छी?"

"मधुबनी जिला।"

"केतए जाएब?"

"नोकरी करए एलौं।"

"ऐठाम रहब?"

"हँ। रहब।"

जहिना अतिथि-अभ्यागतकेँ दुआरपर अबिते घरवारी लोटामे पानि आनि आगूमे दैत, खाइक आग्रह करैत तहिना शोभाकान्तकेँ मिस्त्री केलक। आठ-अना पाइ दऽ आँगुरक इशारासँ मुरही-कचड़ीक दोकान देखबैत कहलकै जे ओइ दोकानसँ जलखै केने आउ। ..झोरा रखि शोभाकान्त विदा भेल। ओना, गाड़ीक झमारसँ देहो-हाथ दुखाइत रहै आ भूखो लगलै रहइ। किन्तु नोकरी पाबि देहक दरदो आ भूखो कमए लगलै। खाएर.., मुरही-कचड़ीक दोकानपर बैसते शोभाकान्तकेँ बगे-

बाणि देख दोकानदार पुछलकै-

“बौआ, अहाँक घर केतए छी?”

“मधुबनी जिला।”

“गामक नाओं कहू।”

“लालगंज।”

“हमरो घर तँ अहाँक बगलेमे अछि, रूपौली। बीस-पच्चीस बर्खसँ हम ऐठाम रहै छी।”

बिनु पाइ नेनहि दोकानदार शोभाकान्तकेँ भरि पेट खुआ देलक। खा कऽ शोभाकान्त साइकिल दोकानपर आबि मिस्त्रीकेँ पाइ घुमबैत कहलक-

“दोकानदार पाइ नै लेलक।”

मुदा गहिंकी सबहक भीड़ दुआरे मिस्त्री आगू किछु नइ पुछलक।

पंचर साटब, छोट-छोट भंगठी केनाइसँ शोभाकान्त अपन जिनगी शुरू केलक। छोट-छोट काज भेने दोकानदारोकेँ आगू बढ़ैक अवसर हाथ लगलै। साइकिल, रिक्साक संग मोटर साइकिल आ टेम्पूक मरम्मत केनाइ सेहो शुरू केलक। ..शोभाकान्तोकेँ मौका भेटलै। उपार्जनक लूरि आबए लगलै। दुनियाकेँ बिसैर रिंच-हथौरीमे मगन भऽ गेल।

छह मास बितैत-बितैत शोभाकान्त साइकिल-रिक्साक मिस्त्री बनि गेल, संगे मोटर साइकिल आ टेम्पू चलौनाइ सेहो सीखि लेलक। मेहनत केने शरीरो फौदा गेलइ। साले भरिमे जवान भऽ गेल।

ड्राइवरीक लाइसेंस शोभाकान्त बना लेलक। लाइसेंस बनैबते शोभाकान्तक मनमे द्वन्द उत्पन्न हुअ लगलै जे ड्राइवरी करी आकि अपन दोकान खोलि मिस्त्रियाइ। मुदा अपन दोकान खोलैले घर भाड़ाक संग मरम्मत करैक समानो लिअ पड़त। फेर मनमे एलै, एक तँ मेन-रोडमे घर

नइ भेटत, दोसर पैयो ओते नइए जे समानो कीनब। तइसँ नीक जे ड्राइवरीए करी। सएह केलक। ड्राइवरीमे दरमहो नीक आ बाइलियो आमदनी। महिना दिन तँ अ-बेवस्थिते रहल मुदा दोसर मास बितैत-बितैत असथिर भऽ गेल। दरमाहा जमा करए लगल आ बाइली आमदनी घर पठबए लगल।

साल भरिक दरमाहासँ शोभाकान्त टेम्पू कीनि लेलक आ अपन सभ समान ओहीपर लादि सोझे गाम चलि आएल।

सेकेण्ड डिवीजनसँ उमाकान्त बी.ए. पास केलक। ओना, पढ़लो-लिखल लोक कम मुदा ओहूसँ कम नोकरी। खेती-पथारी आ कारोबार कियो पढ़ल-लिखल करए नइ चाहैत। जइसँ गाम-सबहक दशा दिनो-दिन पाछुए-मुहेँ ससरैत। गामक लोको तेहने जे पढ़ल-लिखल लोककेँ खेती करैत देख दिल खोलि कऽ हँसबो करैत आ लाख तरहक लांछना सेहो लगबैत। जइसँ गामक पढ़ल-लिखल लोककेँ नोकरी करब मजबूरी भऽ जाइत।

नोकरीक भाँजमे उमाकान्त दौग-धूप करए लगल। मुदा मनमे संकल्प रखने जे घूस दऽ कऽ नोकरी नै करब। चाहे नोकरी हुअए वा नहि। दौग-धूपसँ मन विचलित हुअ लगलै, संकल्प डोलए लगलै, मनमे अनेको प्रश्न औंढ़ मारए लगलै। करखनो-करखनो मनमे होइ जे पाँच कट्ठा खेत बेच कऽ नोकरी पकैड़ लेब। मुदा फेर मनमे होइ जे जहन घूस दऽ कऽ नोकरी लेब तँ घूस लऽ कऽ लोकक काज किए ने करबै। फेर मनमे होइ जे तहन जिनगी केहेन हएत? अछैते जीबने मुर्दा बनल रहब। लोक शरीर तियागक पछाइत मृत्यु धारण करैए आ हम जीवितेमे मरल रहब। फेर मनमे एलै, पत्नी तँ जीवन-संगिनी छैथ तँए एक बेर हुनकोसँ पुछि लिऐन। उमाकान्तक मनमे शान्ति एलै, पत्नी लग जा पुछलक-

“बिनु घूस-घासक नोकरी भेटब कठिन अछि, से अहाँक की

विचार?”

मुस्कियाइत पत्नी कहलकैन-

“आइक जुगमे नोकरी भेटब जिनगी भेटब छी, तँए हमरो गहना-जेबर अछि आ जँ ओइसँ नै पुरए तँ थोड़े खेतो बेच कऽ नोकरी पकैड़ लिअ। देखते छिऐ जे साले भरिमे लोक की-सँ-की कए लइए।”

एक तँ ओहिना उमाकान्तक मन घोर-घोर होइत रहै, तैपर सँ पत्नीक बात आरो मरनासन्न बना देलकै। जिनगीक आशा टुटए लगलै। आँखिक रोशनी क्षीण हुअ लगलै। आशाक ज्योति केतौ बुझिए ने पड़इ। जहिना अन्हारमे सगतैर भूते-प्रेत, चोरे-चहार आ साँपे-छुछुनैर बुझि पड़ैत तहिना उमाकान्तकेँ हुअ लगलै। मुदा डुमैत जिनगीक आशामे कनी टिमटिमाइत इजोत बुझि पड़लै। इजोत अबिते शक्तिक संचार हुअ लगलै। मनमे संकल्पक अंकुर अंकुरित हुअ लगलै। जइसँ दृढ़ताक उदए सेहो हुअ लगलै। मने-मन विचार करए लगल, जिनगीक किछु लक्ष्य हेबा चाही। मनुख तँ चुट्टी-पिपड़ी नहि ने छी जे साधारण केकरो पएर पड़लासँ मरि जाएत। मनुख तँ व्रह्मक अंश छी, जइमे विशाल शक्ति छिपल छइ। जिनगीमे अहिना हवा-बिहाड़ि अबै छै तइसँ की मनुख मनुखता गमा लेत। मनुखते तँ मनुखक धरोहर सम्पैत छी। जेकरा लोक ओहिना केतौ फेक देत? कथमपि नहि..! उमाकान्तक मनमे उठलै। मने-मन तँइ केलक जँ हमरा नोकरी नइ भेटत तँ की हाथपर हाथ दऽ कऽ बपहारि काटब? एते कमजोर छी? की हमरामे मनुखक सभ गुण मरि चुकल अछि, हमरा बुते किछु कएल नै हएत? जरूर हएत..!

नोकरी दिससँ नजैर हटा उमाकान्त राशनक दोकान चलबैक विचार केलक। विचार ऐ दुआरे केलक जे जीबैले अर्थक उपार्जन जरूरी होइत। जिनगीक अधिकांश काज अर्थेसँ चलैत, तँए बिनु अर्थे जिनगी जिनगी नै रहि जाइत। हँ ई बात जरूर जे अर्थक उपार्जन आ उपयोगक

ढंग नीक हेबा चाही। राशनक दोकानक जरूरत सभ गाममे ऐछे, सरकार आ समाजक बीचक कड़ी सेहो छी। ओना, डीलरीक लाइसेंसो बनबैमे पाइयेक खेल चलैए। मुदा तैयो जी-जाँति कऽ उमाकान्त लाइसेंस बनबै दिस बढ़ल।

डीलरीक लाइसेंस बनौला पछाइत उमाकान्त समान उठबैसँ पहिने मिश्रीलालसँ कारोबारक तौर-तरीका बुझैले गेल।

मिश्रीलाल पुरान डीलर। मुदा जहिना गाममे अपन इज्जत बनौने तहिना सरकारियो ऑफिसमे। इज्जत बनबैक अपन तरीका मिश्रीलालक। तँए ब्लौकक पैंतालिसो डीलर मिलि मिश्रीलालकेँ यूनियनक सेक्रेट्री बनौने। जहिना सभ डीलर मिश्रीलालकेँ मानैत तहिना मिश्रीलालो सभकेँ। ..यएह बुझि उमाकान्त भेँट करब आवश्यक बुझलक। मिश्रीलाल ऐठाम उमाकान्त पहुँचल तँ देखलक जे चारि-पाँचटा धिया-पुता रजिस्टरपर दसखतो करैए आ निशानो लगबैए। किएक तँ पैछला मासक समान बँटबारा भऽ गेल छेलै, तँए बिनु रजिस्टर तैयार भेने ऐगला समान थोड़े उठत। जरूरी काज बुझि मिश्रीलाल मगन भऽ अपन काज करैत। ..उमाकान्तकेँ देखते मिश्रीलाल रजिस्टरक बिच्चेमे, जइ पेजमे निशान आ हस्ताक्षर करबैत रहए, तही पेजमे पेनो आ कार्बनो रखि मोड़ैत बेटाकेँ कहलक-

“बौआ, चाह बनबौने आबह?”

उमाकान्त दिस होइत पुछलक-

“किमहर किमहर एनाइ भेलै बौआ।”

निर्विकार भऽ उमाकान्त बाजल-

“भैया, अहाँ पुरान डीलर छी। डीलरीक सभ किछु जनै छिऐ। बी.ए. केला पछाइत हम दू साल नोकरीक पाछू वौएलौं मुदा केतौ गर नै धेलक। आब तँ नोकरीक उमेरो ओराएले जाइए, तँए नोकरीक आशा

तोड़ि डीलरीक लाइसेंस बनेलौं हेन।"

नोकरीक गर नै लागब सुनि मिश्रीलाल पुछलकै-

"बौआ, जहिना कोनो परिवारमे चारि-पाँच भाँइक भैयारी रहैए। सभ किछु शामिले रहै छइ, मुदा सभ भाँइक पत्नीकेँ अप्पन-अप्पन सम्पैत सेहो छइ, जइमे भाइयो सभ चोरा-नुका शामिल भऽ जाइए, जेकर फल होइ छै घरमे आगि लागब, तहिना नोकरियो सभमे भऽ गेल अछि। जे कुरसीपर अछि ओ अपने सार-बहनोइक जोगारमे रहैए। कहीं केतौ बिकरियो होइ छइ। जेकर परिणाम बनि गेल अछि जे नोकरी केनिहारोक वंश बनि गेल अछि। देशक विकास केहेन अछि से तँ तूँ पढ़ले-लिखल छह, सभ किछु जनिते छहक। जँ कनी-मनी एक रत्ती आगूओ बढ़ि रहल अछि तँ ओइसँ बेसी ओइ नोकरिहाराक वंशमे नोकरी केनिहार बढ़ि रहल अछि। तँए देखबहक जे डॉक्टरेक बेटा डॉक्टर बनत। इंजीनियरेक इंजीनियर। केते कहबह। जे जेतै अछि ओ बपौती बुझि ओकरा पकड़ने अछि। तैबीच तेसरकेँ जे गति हेबा चाही सएह तोरो भेलह। तहूसँ बेसी जुलुम अछि जे किछु गनल-गूथल लोक अछि जे नोकरियो करैए, खेतो हथियौने अछि आ जे कोनो सरकारी योजना बनै छै ओकरो हड़पैए। जइसँ देखबहक जे केकरो सम्पैत राइ-छित्ती होइ छै आ कियो सम्पैत-ले लल्ल अछि।"

उमाकान्त-

"भैया, दुनियाँ-दारीक गप छोड़ू। अपना काजक विषयमे कहू।"

मिश्रीलाल-

"बौआ, अखन तूँ जुआन-जहान छह। मुदा जे काज करि कऽ अपना जीबए चाहै छह ओ गलती भेलह। तोरा सन आदमीकेँ डीलरी नइ करक चाही। हम तँ सभ घाटक पानि पिनाइ सीखि नेने छी। की नीक की अधला से बुझिते ने छिऐ। बुझह तँ नढ़ड़ा-हेल हेलै छी, तँए हमर

कारबार ठीक अछि। मुदा तोरा बुते नै हेतह।

उमाकान्त-

“किए?”

तैबीच चाह आएल। दुनू गोरे हाथमे गिलास लेलक। एक घोंट चाह पीब मिश्रीलाल बजला-

“देखहक, डीलरी दू दुनियाँक सीमा परहक काज छी। एक दिस सत्ताक दुनियाँ अछि आ दोसर दिस आम लोकक। गड़बड़ दुनू अछि।”

उमाकान्त-

“से की?”

मिश्रीलाल बुझबैत बजला-

“पहिने पब्लिकेक बात कहै छिअ। राशनक वस्तु चीनी-मटियातेल तँ हिसाबेसँ भेटैए। नामे छिऐ कोटा। जँ मनमाफित भेटैत तँ खुल्ला बजार रहितै, से तँ नइ अछि। गाममे किछु एहेन-एहेन रंगबाज सभ बनि गेल अछि जेकरा खाइ-पीबैले नै देबहक तँ भरि दिन अपनो आ अनको उसका-उसका रग्गड़े करैत रहतह। रग्गड़केँ तँ कोनो सीमा नै होइ छइ। जँ कहीं गोटे दिन लाठीए-लठौवैल भऽ जेतह तहन तँ लेनीक देनी पड़ि जेतह। दू पाइ कमाइले धन्धा करबह आकि कोट-कचहरीक फेड़मे पड़बह। बुझिते छहक जे कोट-कचहरी लोकेक पाइपर ठाढ़ अछि। ओइ साला रंगबाज सभकेँ की अछि। अपने किछु करतह नइ आ अनका काजमे हरिदम टाँगे अड़ौतह। गामक उत्पातसँ लऽ कऽ थाना-पुलिस, कोट-कचहरीक दलाली भरि दिन करैत रहतह। आब तोंही कहह जे बरदाश हेतह? नीक लोक-ले ऐ दुनियाँमे केतौ जगह नइ अछि। ओइ साला सभकेँ की छै, भरि दिन ताड़ी-दारू पीब ढहनाइत रहैए। ने छोट-पैघक विचार छै आ ने गारि-मारिक। तैपर सँ पंचायतक मुखियो आ वार्डो-मेम्बर सभकेँ कमीशन चाहबे करिऐ। पब्लिको तेहने अछि।

देखबहक जे केतेक एहेनो परिवार अछि जेकरा कोटाक वस्तुक जरूरत नइ छै जेना चीनी। मुदा ओहो कोटासँ चीनी उठा दोकानमे किछु नफा लऽ कऽ बेच लइए। जहन कि किछु परिवार एहेनो अछि जेकरा कोटाक वस्तुसँ खर्च नै पुरै छइ। अपनो आँखिसँ देखबहक जे दस-बीस कप चाह आने पीबै छइ। की ओकरा सभकेँ फाजिल नै देबहक? जखने एक गोरेकेँ फाजिल देबहक तँ दोसराक हिस्सा कटबे करत। एहेन स्थितिमे डीलरे की करत। आखिर ओहो तँ समाजेक लोक छी किने... ।”

उमाकान्त-

“सभ गोरे तँ कोटा उठैबतो नै हेतइ?”

मिश्रीलाल-

“हँ, सेहो होइए। मुदा ओ तहन होइए जहन कोटाक वस्तुक दाम आ खुल्ला बजारक दाममे अन्तर नै रहैए। मुदा जहन दुनूक दाममे अन्तर रहैए तहन जेकरो ने अपना पाइ रहै छै ओहो दोकानदार सभसँ अदहा-अदही नफापर पाइ लऽ कऽ समान उठा लइए आ बेच लइए। तेतबे नहि, ओहो चाहतह जे किछु फाजिले कऽ समान भेटए।”

मुँह बिजकबैत उमाकान्त बाजल-

“तब तँ बड़ ओझरी अछि।”

उमाकान्तक सोचकेँ गहराइ दिस जाइत देख मुस्कियाइत मिश्रीलाल-

“बौआ, एतबेमे छगुन्ता लगै छह। ई तँ एक दिसक बात कहलियह। अहूमे केते ओझरी छुटिए गेलह। जँ सेरिया कऽ सभ बात कहबह तँ सैंकड़ो ओझरी आरो अछि। आब सुनह ऑफिस, बैंक आ एफ.सी.आइ. गोदामक सम्बन्धमे। दौग-बरहा जे करए पड़तह ओकरा छोड़ि दइ छिअ। किएक तँ मोटा-मोटी यएह बुझह जे एक दिनक काजमे पनरहो दिनसँ बेसीए लगतह। जइमे समैयक संग पच्चीस-पचास पौकेटो

खर्च हेबे करतह।"

उमाकान्त-

"तब तँ बड़ लफड़ा अछि?"

मिश्रीलाल-

"लफड़ा की लफड़ा जकाँ अछि। जखने ब्लौक पएर देबहक आकि गीध जकाँ चारू-भरसँ अफसरसँ लऽ कऽ चपरासी धरि, नोंचए लगतह। कियो कहतह जे चाह पिआउ तँ कियो कहतह पान खुआउ। कियो कहतह सिगरेट पियाउ तँ कियो मिठाइ खुआउ। सुनि-सुनि मन मौहुरा जेतह। मुदा की करबहक। भीखमंगोसँ गेल-गुजरल चालि देखबहक। जेना अपना दरमाहा भेटते ने होइ। मुदा डीलरे की करत। अगर जँ सभकेँ खुशी नै राखत तँ काजे लटपटेतै। काजो तेहेन अछि जे एक्के टेबुलसँ नै होइ छइ। जेते टेबुल तेते खर्च।

..अखन हमहू औगताएल छी तँए नीक-नहाँति नै कहि सकबह। देखते छहक जे रजिस्टर तैयार करै छी, ब्लौक जाएब। मुदा तैयो एक-दूटा बात कहि दइ छिअह। सबहक तड़ी-घटी ने हम बुझै छिऐ।"

उमाकान्त-

"कनी-कनी सबहक बात कहि दिअ?"

मिश्रीलाल-

"औगताएलमे की सभ बात मनो पड़ै छइ। मुदा जे मन पड़ैए से कहि दइ छिअ। पहिने बैंकक सुनह। कोरियापट्टीमे दुनियाँलाल डीलर अछि। वेचारा बड़ मुँहसच्च। जहिना-जहिना समान बिकाएल रहै तहिना-तहिना पाइ रखने रहए। खुदरा समानक बिकरी तँए खुदरा पाइ। ऐगला कोटा-ले जहन बैंकमे जमा करए गेल तँ खुदरा पाइ देख बैंकमे लेबे ने केलकै। कहलकै जे ओते हमरा छुट्टी अछि जे भरि दिन तोरे पाइ गनैत रहब।

भरि दिन वेचारा छटपटा कऽ रहि गेल। बैंकसँ निकलबो ने करए जे पौकेटमार सभ ने कहीं पाइ उड़ा दिअए। दोसर दिन आबि कऽ हमरा कहलक। तामस तँ बड़ उठल। किएक तँ जेना मोटका पाइ सरकारक होइ आ खुदरा नहि! जहन पाइयेक लेन-देन बैंकमे होइ छै तँ गनैले स्टाफ राखह। मुदा की करितिऐ। दोसर दिन गेलौं। मनेजरकेँ कहलिऐ। तहन दू प्रतिशत कमीशनपर फरियाएल। आब तोंही कहह जे ई दू प्रतिशत कोन बिलमे चलि गेल? तहिना दोसर बात लएह- सप्लाइ इन्सपेक्टरक। इन्सपेक्टरक बदली भेल। नव इन्सपेक्टर बुझि पनरह-बीसटा डीलर ओकरा पाइ नै देलकै।

ओना, पचास रूपैए प्रति डीलर प्रति मास इन्सपेक्टरकेँ दइए। सभकेँ मनमे भेलै, नव हाकिम छैथ तँए छह मास तँ इमानदारी रखबे करता। ले-बलैया! जहाँ डीलर दोसर कोटाक सभ समान उठौलक आकि पराते भेने बिसनाथ डीलर ऐठाम पहुँच गेल! बिसनाथोकेँ कोनो डर मनमे नहि। किएक तँ समान ओहिना पड़ल छेलइ। घरपर अबिते इन्सपेक्टर चीनी काँटा करैले बिसनाथकेँ कहलकै। बिसनाथो तैयार भऽ काँटा करए लगल। पाँचो बोरा मिला कऽ चौदह किलो चीनी कमि गेलइ... ।”

बिच्चेमे उमाकान्त-

“किए, चीनी तौल कऽ नइ नेने रहइ?”

मिश्रीलाल-

“ई एफ.सी.आइ. गोदामक खेल छिऐ। एफ.सी.आइ. गोदाम तँ ब्लौके-ब्लौके ने अछि। तँए देखबहक जे डीलर सबहक नम्मर लगल अछि। सभकेँ औगताइ करैत देखबहक। किएक तँ अपन टाएर गाड़ी तँ सभ डीलरक रहै नइ छइ। अधिक डीलर भड़ेपर गाड़ी लऽ जाइए। तँए मनमे होइत रहै छै जे जेते जल्दी समान हएत तेते कम भाड़ा लगत, तँए कियो समान तौलबैत नै अछि। हँ, जँ कियो पच्चीस रूपैए बोरा मनेजरकेँ

दऽ देने रहलै ओकरा तँ नीक समानो आ पुरल बोरो देलक आ जे पाइ नै देने रहल ओकरा समानो दब आ घटल बोरो देलक। चोर-पर-चोर अछि!"

क्षुब्ध होइत उमाकान्त बाजल-

"हद लीला सभ अछि।"

मिश्रीलाल-

"आब मार्केटिंग अफसर एम.ओ.क बात सुनह। अखुनका जे एम.ओ. अछि ओ पिआक अछि। ओना, काज करैमे भुते अछि। रस्तो-बाटमे मोटर साइकिल लगा फाइलपर लिखि दइए, मुदा ओहिना नहि। पहिले एक बोतल पिआ देबहक, तखन।"

उमाकान्त-

"अफसर भऽ कऽ रस्ता-बाटपर बोतल पीबैए?"

ठहाका मारि हँसि मिश्रीलाल-

"बौआ, तूँ गाम-घरक बात बुझै छहक। गाम-घरमे जे छोट-पैघ आकि इज्जत-आबरूक विचार अछि ओ केतए पेबह। मुदा तैयो ओकरामे दूटा गुण जरूर छइ। पहिल गुण छै जे आन कोनो स्त्रीगण दिस नै तकैए। आ दोसर गुण छै जे केकरोसँ एक्को पाइ नै लइए। मुदा ऐसँ पहिलुका एम.ओ. जे रहए ओ भारी पइ-खौक। सभ काजक रेट बनौने रहए। जे सभ बुझइ। तँए जेकरा जे काज रहै ओ ओइ हिसाबसँ पाइ दऽ दइ आ लगले काज करा लिअए।"

मुस्कियाइत उमाकान्त-

"तब तँ पक्का नटकिया सभ अछि।"

मिश्रीलाल-

"नटकिया कि नटकिया जकाँ अछि। रंग-बिरंगक चोर सभ पसरल

अछि। कियो धनक चोर अछि तँ कियो धर्मक। कियो बुधिक चोर अछि तँ कियो विवेकक। केते कहबह। तेसराक सुनह। अन्दाज करीब पचपन छप्पन बर्खक उमेर ओकर रहइ। मुदा फीट-फाटमे जुआनक कान कटैत। जेहने हीरोकट कपड़ा पहिरैत तेहने हिप्पीकट केश रखैत। रंग-बिरंगक तेल आ सेंट लगबै। हरिदम ऊपरका जेबीमे ककही देखबे करितहक। रातियोमे कएक बेर केश सीटइ। चौबीस घन्टामे दू बेर दाढ़ी बनबै। ओ एम.ओ. भारी नरचोप, जेहने अपने तेहने बहुओ। दिन भरिमे पच्चीसो बेर कपड़ा साड़ी-ब्लाउज आ जूत्ता-चप्पल बदलै। केशमे केते रंगक क्लीप लगबै तेकर ठेकान नहि। भरि दिन रिक्सापर ऐ डेरासँ ओइ डेरा आ ऐ बजारसँ ओइ बजार घुमिते रहै छल। संयोगो ओकरा नीक भेटलै। एक्के बेर बी.डी.ओ., सी.ओ.क बदली भऽ गेलइ। ओकरे दुनू गोरे चार्ज दऽ कऽ गेल। ओही बीच शिक्षा मित्रक भेकेन्सी भेल। लड़की सभकेँ आरक्षण भेटलै। जइमे जाति प्रमाणपत्रक जरूरत पड़इ।"

अपसोच करैत मिश्रीलाल आगू बाजल-

"बौआ की कहबह, ओइ सालाक डेरा बेश्यालय बनि गेल! करखनो ब्लौक ऑफिसमे नै बैइसै। जहन बैसबो करै तँ आन-आन कागत देखै मुदा एक्कोटा जाति प्रमाणपत्रपर हस्ताक्षर नै करइ।"

बिच्चेमे उमाकान्त बाजल-

"परिवारक कियो किछु ने कहइ?"

"स्त्रीक विषयमे तँ कहिए देलियह। जेठकी बेटी बी.ए.मे पढ़ैत रहइ। ओकरो चालि-ढालि बापे-माए जकाँ। कौलेजेक एकटा छौंड़ा जे आदिवासी क्रिश्चन छल तेकरा संग भागि गेल।"

उमाकान्त-

"बाप-माएकेँ लाज नइ भेलइ?"

"लाज तँ तेहेन भेलै जे राता-राती ऐठामसँ भागल।"

“अहूँकेँ बहुत काज अछि आ हमरो मन भरि गेल। आखिरीमे एकटा बात बुझा दिअ।”

मिश्रीलाल-

“की?”

उमाकान्त-

“अहाँ केना अप्पन प्रतिष्ठा समाजो आ ऑफिसोमे बना कऽ रखने छी?”

मिश्रीलाल मुस्कियाइत-

“समाजमे जेकरा ऐठाम सराध, बिआह, उपनैन, मूड़न, भनडारा वा आन कोनो तरहक काज होइ छै तँ ओकरा हम जरूर चीन्नियोँ आ मटियो तेलक पूर्ति कैये दइ छिऐ। भलेँ अपना लग नहियोँ रहल तैयो जेतए-तेतएसँ आनि पुराए दइ छिऐ। जइसँ समाजक सभ खुशी रहैए। ऑफिसक बात तँ पहिने कहि देलियह।”

उमाकान्त-

“हमरा की करक चाही? किएक तँ जइ हिसाबे अहाँ कहलौं तइसँ हम्मर मन भटैक रहल अछि।”

मिश्रीलाल-

“बौआ, जहन लाइसेंस बना लेलह तहन कम-सँ-कम एक खेप समान उठा कऽ बाँटि लएह। जइसँ समाजोक चालि-ढालि आ ऑफिसोक चालि-ढालि देख लेबहक। बेवहारिक ज्ञान भऽ जेतह। बेवहारिके ज्ञान असली ज्ञान छिऐ। अखन हम एते मदैत जरूर कऽ देबह जे तोरा केतौ अड़चन नै हेतह। मुदा दोसर खेपक भार हम नै लेबह। किएक तँ बुझिते छहक जे बिलाइ जे मूससँ दोस्ती करत तँ खाएत की? तोरो सीखैक अवसर भेट जेतह।”

उमाकान्त-

“बड़बढ़ियाँ! जहिना अहाँ कहलौं तहिना करब।”

मिश्रीलाल-

“बाउ, आब तँ हम बुढ़ भेलौं। जहिया हम सोल्हे बर्खक रही तहिए-सँ डीलरी करै छी। मुदा पहिलुका आ अखुनकामे अकास-पतालक अन्तर भऽ गेल अछि। जेते धन आ शिक्षाक प्रसार भेल जा रहल छै ओते घटिया मनुख सेहो बढ़ि रहल अछि। पहिने इमानदार लोक बेसी छल मुदा आब आँगुरपर गनए पड़तह। हम तँ डीलरीमे रमि गेलौं। सभ घाटक पानि पिनाइ सीखि नेने छी तँए नीक छी।”

उमाकान्त-

“चलैत-चलैत किछु..?”

“जहिना आमक गाछ होइ छै जे आमक आँठीसँ जनमैए तहिना तँ मनुखोक होइ छइ। दुनियाँमे जेते मनुख अछि, सभ तँ मुरूखे भऽ कऽ जन्म लइए। मुदा ऐठाम जेकरा जेहेन परिवार, समाज आ वातावरण भेटै छै ओ ओहेन बनैए। जहिना आमक छोट-छोट सरही गाछकेँ नीक-नीक कलमी आमक गाछक डारिमे बान्हि कलम लगा नीक-नीक आम बनौल जाइए। तहिना मनुखोक होइत। मुदा नीक परिवार, नीक समाज ऐछे केतेक। अधिकांश तँ गेले-गुजरल अछि। ने सभकेँ भरि पेट खेनाइ भेटै छै आ ने नीक बात-विचार। तहन नीक मनुख बनत केना? जाधैर नीक मनुख नै बनत ताधैर नीक समाज केना बनत? तहन तँ जएह अछि तइमे अपनाकेँ जेते नीक बना जीब सकी, वएह संतोखक बात। तहूँ अखन सादा कागत जकाँ साफ छह, तँए हम चाहब जे गन्दा नै हुअ। जेहेन विचार, हाथ होइत कर्म बनि निकलतह तेहेन जिनगी हेतह। कियो शरीरांतकेँ मृत्यु बुझैए आ कियो आत्माक हननकेँ। मनुखमे असीम शक्ति छिपल छै, ओकरा जगबैक अछि, जे हमहूँ सेरिया कऽ नहियेँ बुझै

छिऐ।”

जहिना तेज हथियार हाथमे एलासँ सक्कत-सक्कत वस्तु काटैक हूबा बनि जाइत तहिना उमाकान्तोकेँ भेल। विचार केलक जे आब बैलगाड़ीक जुग नइ रहल। मशीनक जुग आबि गेल तँए हमहूँ अपना हाथसँ इन्जिने चलाएब।

❑ साभार : गामक जिनगी

धर्मनाथ

प्रशासनिक सेवाक पच्चीस सालक पछाइत धर्मनाथ एहेन दलदलमे फँसि गेला जइसँ निकलब कठिन भऽ गेलैन। सुसम्पन्न परिवारमे जन्म भेने जिनगीमे कहियो दुखक अनुभव नइ भेल छेलैन। परिवारमे सरबे-सरबा पिता रहथिन तँए कोनो पैघ-सँ-पैघ काज उपस्थित भेने निपैट जाइन। लोप होइत जमीन्दारी बेवस्था, ढेरो सम्पैत गाम-सँ-बाहर धरि रहैन। चारि भाँइक भैयारी रघुनाथकेँ। चारू भाँइक बीच बँटवारा भऽ गेलैन। मन्दिर, स्कूल, खेत, पोखैर सभ बँटा गेलैन। भैयारीमे जेठ रहने रघुनाथकेँ पाँच बीघा जमीन जेठौंस तरे भेटलैन। रघुनाथकेँ चारि कन्या तीन पुत्र। दू कन्याक बिआह साझीए-मे भेल छेलैन। बाँकी दुनू कन्याक बिआहमे आठ बीघा खेत बिकलैन। घरक बरतन-बासन आ गहना-जेबर सेहो बन्हकी लगि गेलैन। तैयो पहिलुका अपेक्षा कुटुमैती हल्लुके भेलैन।

बच्चेसँ घर्मनाथ सुशील, सौम्य आ कर्मठ, जइसँ आइ.ए.एस. परीक्षा नीक-नहाँति पास केलैन। आइ.ए.एस. अफसर बनिते खानदान रूपी वृक्षमे फूल खिलल। अखन धरि परिवारमे सरस्वतीक अपेक्षा लक्ष्मीक सेवा अधिक होइत, जे आब बदलल। खानगी शिक्षा सार्वजनिक रूपमे बढ़ए लगल। घरक चिन्तासँ मुक्त धर्मनाथ, तँए

परिवारक भविस मात्र अनुमानसँ करैथ। अखन धरिक सेवा (नोकरी) धर्मनाथक इमानदारीक गंगामे बीतल। जहिना गंगामे सुरूजक प्रकाश पड़लासँ चमकैए तहिना धर्मनाथक जिनगीमे इमान स्पष्ट झलकैत रहैन।

आरम्भमे कम वेतन आ छोट परिवारो धर्मनाथकेँ रहैन। जे आस्ते-आस्ते परिवारो बढ़लैन आ वेतनो। पाछू-पाछू महगियो पछुऔलकैन। बासी बँचए ने कुत्ता खाए। मासक कमाइ मासेमे सठि जाइन।

परिवारक बजट, धर्मनाथ एहेन बनौने छला जे वेतनक भीतरे चलि जाइन। मुदा संगी-साथीक बीच पैंच-पालट सेहो चलैत रहैन। कर्ज लेब आ सूदिपर कर्ज देब, दुनूकेँ धर्मनाथ पाप बुझैथ। सदिखन परियास रहैन जे परिवार मेहनती बनए। पत्नी समैक उपयोग नियमबद्ध भऽ करैन। खाइ-पीबैक वस्तुसँ लऽ कऽ नुआ-बस्तरपर विशेष धियान राखैथ। कपड़ा साफ करब, आइरन करब, सुइया-डोराक छोट-छीन काज इत्यादि अपने कऽ लइ छेली। पढ़ै-लिखैक वातावरण धर्मनाथक क्रिया-कलापसँ प्रभावित छल। सालक मास भरिक छुट्टी धर्मनाथ गामेमे सपरिवार बितबै छला। छुट्टीए मासक वेतनसँ गाड़ीक मासूलक संग सनेस तक पुरबै छला।

रघुनाथ मने-मन सोचै छला जे गामक अज-गज देख धर्मनाथकेँ होइत हेतैन जे कोनो वस्तुक कमी नहि, मुदा बिना खेत बेचने परिवारक गाड़ी ससरब कठिन अछि। जेते खेत बिकाइ छेलैन ओते उपजो कमिते जाइ छेलैन।

नमहर-नमहर घर। जेकर मरम्मत आ रंग-टीप करैमे सेहो अधिक खर्च होइ छेलैन। ढहल-ढनमनाएल हथिसार। घोड़ाक घर ओहिना पड़ल जइमे बिढ़नी, मधुमाछी, बादुर खोंता लगौने। कटैया काँट आ अन्डीक गाछ सौंसे घरमे जन्मल। जँ टुटलाहा घरक पजेबो रघुनाथ बेच लितैथ तैयो केते काज ससैर जैतैन मुदा जँ घरक पजेबा बिकाएत तँ बाँकीए की

रहत! घरक आगू झील जकाँ पोखैर। पोखैरक चारू महारमे चारिटा ईंटा-सीमटीक घाट बनौल। पुरान भेने चारू घाट टुटि गेल छल, जइसँ नहाइयो-जोकर आब नइ रहल। पजेबा गुड़ैक-गुड़ैक निच्चाँ-पानिमे छिड़िया गेल। पैरमे चोट लगै दुआरे लोक नहेनाइए छोड़ि देलक। सौंसे पोखैर समाढ़ आ कुम्ही तेना वोन जकाँ भेल जे पैसब मोसकिल। बीघा भरिक फुलवाड़ी, जइमे सैयो रंगक फूल लगौल छल। चारिटा नोकर सभ दिन फूलेक देखभाल करै छल जे अखन गाए-महींसक चारागाह बनि गेल।

एक मास अधिक छुट्टी लऽ धर्मनाथ गाम एला। मनमे विचारि आएल छला जे जेठ बेटीक बिआह करब। आशा बी.ए. आनर्सक परीक्षा देने छल। कन्यादान माए-बाप-ले ओहने होइत जेहने बेटा-ले वृद्ध माए-बापक सेवा। उन्नैसम बर्ख आशा टपि गेल, तँए बिआह करब आवश्यक छेलैन। मने-मन धर्मनाथ सोचै छला जे ओहन कार्य उपस्थिति भऽ गेल अछि जइ सम्बन्धमे किछु ने बुझै छी। केना हएत? की करब? किनका कहबैन? विचित्र उलझनमे धर्मनाथक मन उलझल रहैन। हमहूँ तँ समाजमे केकरो कोनो उपकार नै केलिऐ तँए कियो हमरे किए करत? गुनधुन करैत कोठरीसँ निकैल, असकरे टहलबो करैथ आ सोचबो करैथ।

गामक बेरोजगार युवक सभ, धर्मनाथकेँ बाहर बुलैत देख कियो साइकिलपर चढ़ि तँ, कियो मोटर साइकिलपर छींटबला शर्ट-पेंट पहिर केश फहरबैत, बामा हाथे रुमाल आ दहिना हाथे साइकिलक हेण्डिल पकड़ने, मुँहमे सिगरेट लगौने धर्मनाथक आगूमे अँठि-अँठि कऽ धुँओ उड़बैत आ चक्करो कटैत। ओना, धर्मनाथ मुड़ी निच्चाँ केने चलैथ मुदा अफसरक आँखि बिना देखने केना रहत। इमानक आँखि रहने धर्मनाथमे कोनो करुआहट नहि, जे प्रतिष्ठाकेँ मिसियो भरि डगमगैबतैन। मने-मन यएह सोचैथ जे प्रतिष्ठा ओहन वस्तु छी जे ने केकरो देने होइ छै आ ने

केकरो लेने जाइते छइ। ओ अपने केने होइ छै आ अपने केने जाइ छइ।

गाम एला धर्मनाथकेँ सात दिन भऽ गेलैन। मुदा अखन धरि बिआहक कोनो चरचो नइ भेल।

आठम दिन धर्मनाथ आशाक बिआहक चर्चा पिता लग केलखिन। पिता असमंजसमे पड़ि मने-मन सोचए लगला जे अखन धरि जेहेन खानदानी आ सम्पन्न परिवारमे कुटुमैटी करैत एलौं, ओहन घरमे एते पढ़ल-लिखल बर भेटब मोसकिल अछि। जँ भेटबो करत तँ खर्चाक इत्ता नइ रहत। धर्मनाथ केते खर्च करता से कहबे ने केलैन। पुछबैन केना? हमरो तँ पोतीए छी। खाएर.., बोल-भरोस दइक खियालसँ रघुनाथ फोन उठा कुटुमसँ लऽ कऽ दोस-महिम धरिकेँ जानकारी दैत भँजियबैले कहलखिन।

जिनगीक चढ़ा-उतरी रघुनाथक विचारकेँ बदैल देलकैन। जखन पहिलुका सुख-भोग मन पड़ै छेलैन तँ आँखिसँ नोर टघड़ए लगैन। मुदा आब पछतेनहि की, चिड़िया तँ चुकि गेल! जेतबो दिन मृत्युक शेष छैन ओहो केते निच्चाँ ढड़कतैन सेहो ठीक नहि। सिरिफ एक्केठामसँ एम.ए. पास लड़का भाँजपर चढ़लैन मुदा कुल-मूल दब।

जमा केलहा सहित बिआहक खर्च लेल धर्मनाथ एक लाख रूपैआ लऽ कऽ आएल छला। दरमाहापर जिनिहारकेँ परिवारक खर्च पुरौलापर जेतेक बँचैत ओ जँ जिनगियो भरि जमा तरता तैयो आइक युगमे एकटा बेटीक बिआह पार लगब कठिन अछि।

प्रशासनिक काजमे धर्मनाथ दक्ष बुझल जाइत तँए विशेष इज्जत रहैन। इमान आ चरित्रकेँ बँचबैत धर्मनाथ ऊपर-निच्चाँक बीच ताल-मेल बैसा आसानीसँ ऑफिसक काज निपटा लइ छला। मुदा परिवारक काजसँ अनभिज्ञ रहने किछु फुरबे ने करैन। गाम एलापर मने-मन अन्दाजैथ जे कियो मदैत करैबला छैथ कि नहि! एकाएक धर्मनाथकेँ

पच्चीस-तीस साल पहिलुका बात मन पड़लैन। प्रोफेसर रामरतन, जे विचारवान आ समाजिक लोक सेहो छैथ, गुरुओ छैथ, दू साल पढ़ेनौं छैथ, हुनका जा कऽ कहिऐन। हमरासँ तँ कहियो हुनका मुहाँ-ठुट्ठी नइ भेलैन मुदा पिताजीसँ बक्क-झक्क होइते रहै छैन। सायंकाल धर्मनाथ राधाकेँ कहलखिन-

"काकीजी, ऐठाम जा रहल छी। जँ काकाजी भेँट भऽ जेता तँ बात-विचार करैमे अबेरो भऽ सकैए। तँए अनदेशा नै करब।"

एक टकसँ राधा पति दिस देखैत रहली। चिन्ता आ परेशानी धर्मनाथक चेहरासँ स्पष्ट झलकैत रहैन, पछाइत राधाक नजैर चन्द्रमुखी आशापर पड़लैन, जे अखन धरि दुलार आ सिनेहक मूर्ति छल। अनासुरती कमी बुझि पड़ए लगलैन। थलकमल जकाँ। जे सूर्योदयसँ पहिने उज्जर रहैए आ रसे-रसे लाल होइत गाढ़ भऽ जाइए, तहिना आशाक प्रति बदलैत सिनेह राधाकेँ बुझि पड़ए लगलैन। मने-मन सोचए लगली। यएह छी आजुक समाज। जे बेटी समाजक बुझल जाइए वएह अगम पानिमे गड़गोटियो दइए। ..गुम-सुम राधा ओसारपर बैस रहली।

माइक खसल मन देख आशा पुछलकैन-

"माए, मन किए एते खसल छौ?"

अपनाकेँ छिपबैत राधा बजली-

"नइ- नइ, कहाँ! क... ।"

राधा अपन बेथाकेँ छिपबए लगली, मुदा मलिन मुँह आ बोलक ध्वनि बेथाकेँ अढ़े-अढ़ निकालैत रहैन।

प्रोफेसर रामरतनक दरबज्जा सुन्न देख धर्मनाथ ठाढ़ भऽ सोचए लगला जे भरिसक नै छैथ। मुदा बिना भाँज लगौने घुमबो उचित नहि। असगरे धर्मनाथ प्रोफेसर रामरतनक दुआरपर ठाढ़ रहला। थोड़े-कालक पछाइत तीन-चारि गोरेकेँ अबैत देख बोली अकानैत धर्मनाथक हृदैमे

आशा जगलैन। एक गोरेक हाथमे दूधक लोटा। प्रोफेसर रामरतनकेँ देखते जेना भादवक दुपहरियामे कारी मेघसँ झाँपल सुरूज हवाक सिहकीसँ छँटि जाइए आ भुक-दे सुरूज देख पड़ैत तहिना धर्मनाथकेँ भेलैन। लग अबिते धर्मनाथ प्रोफेसर रामरतनकेँ गोड़ लगलैन।

धर्मनाथकेँ असीरवाद दैत बाँहि पकैड़ चौकीपर बैसबैत प्रोफेसर रामरतन अपने हाथ-पएर धोइले कलपर गेला। पत्नी चित्रलेखा लालटेन नेस आँगनसँ नेने एली। चित्रलेखोकेँ देखते धर्मनाथ गोड़ लगलैन।

असिरवाद दैत चित्रलेखा बजली-

“भगवान, एक-सँ-एक्कैस करैथ। बौआ, अखन केतए छी?”

“चाची, छी तँ बड़ दूर, जनिते हेबै केरल।”

“परिवार आनन्दसँ रहै छैथ किने?”

“हँ, अपने सबहक दयासँ सभ आनन्द अछि।”

“बच्चा?”

“तीन भाए-बहिन। जेठ बेटी, छोट दुनू बेटा। आशा बी.ए.मे परीक्षा देलक। जेठ बेटा आइ.ए.मे आ छोट मैट्रिकमे पढ़ैए।”

“आशा बिआह करै जोग तँ भऽ गेल हएत। काज केनहि बढ़ियाँ।”

“अपनो सएह विचार अछि। तखन तँ...।”

“भगवान थोड़े अधला करता। जे मनमे अछि से हेबे करत। अहाँ सन बेटा भगवान सभकेँ देथुन।”

चित्रलेखाक बात सुनि धर्मनाथक आँखि सिमसिमा गेलैन जे नोरक बून बनि निकलए चाहै छल, जेकरा अपन बामा हाथसँ धर्मनाथ पोछि लेलैन। मुदा बोली फुटिते धर्मनाथक हृदैक बेथा निकलए लगलैन। एकाएक धर्मनाथक मनमे एलैन जे एते पैघ पदपर रहनिहारकेँ जँ आँखिसँ नोर खसैन जे देशक सभसँ पैघ बुझल जाइए! तखन खुशीसँ के रहैत

हएत। ताबे प्रोफेसर रामरतन चापाकलपर सँ हाथ-पएर धोइ खराम पटपटबैत दरबज्जापर एला।

चाहो बनल। लोटामे पानि नेने चित्रलेखा एली। गिलासमे लोटासँ पानि ढारि धर्मनाथकेँ देलखिन। एक गिलास पानि पीब धर्मनाथ चाह पीबए लगला। प्रोफेसर रामरतन चाहक चुस्की लैत धर्मनाथकेँ कुशल पुछलखिन। कुशलक क्रममे धर्मनाथ आशा बिआहक चर्च केलैन।

प्रोफेसर रामरतन कहलखिन-

"केकर बाँकी रहलैए जे अहाँक नै हएत।"

"चाचाजी, समाजसँ तँ सभ दिन हटल रहलौं। जिनगीक पहिल काज छी तँए अगम-अथाह बुझि पड़ैए।"

मुड़ी डोलबैत रामरतन बजला-

"हँ, ठीके कहलौं। अहाँ हमर समाजे नहि, छात्रो छी तँए अहाँक बेटी की हमर बेटी नहि?"

प्रोफेसर रामरतनक विचार सुनि धर्मनाथक ह्रदैमे आशाक अँकुर उदित हुअ लगलैन। जहिना धारामे भँसैतकेँ किछु सहारा भेटलापर खुशी होइ छै तहिना धर्मनाथोकेँ भेलैन।

पच्चीस-तीस बर्ख पहिलुका प्रोफेसर रामरतनक रूप धर्मनाथक ह्रदैमे नाचए लगलैन। धर्मनाथ जिनगीक ओइ चौबट्टीपर आबि ठाढ़ भेल छला, जैठामसँ आगूक रस्ता की हएत से बुझबे ने करैथ। अपन बेथा व्यक्त करैत धर्मनाथ बजला-

"दू मासक छुट्टी लऽ कऽ एलौं जे बेटी बिआहक प्रक्रिया पूरा कऽ घूमब। मुदा आठ दिन ओहिना बीति गेल।"

"सभ काज हँसी-खुशीसँ सम्पन्न भऽ जाएत आ समयपर चलियो जाएब। बीचमे किछु प्रश्न अछि। अखन धरि जमीनदार खनदानमे रहलौं,

जेकर पतन भऽ गेल। सिरिफ ओकर ढाँचा ठाढ़ छइ। जे उदीयमान अछि ओइ दिशामे बढ़ब बुधियारी होएत।"

"अपनेक ऊपर बिआहक भार दऽ रहल छी तँए कोनो तरहक मान-अपमानक प्रश्न मनमे नै अछि।"

"दहेज विरोधी हम सभ दिन रहलौं जेकरे चलैत अहाँक पिताजीक संग मतभेद रहल। मतभेदोक उपरान्त कहियो कोनो अधला केलौं से अखनो मन नइ अछि। आशा हमर बेटी छी। कन्यादान हम करब!"

जोशमे बजैत प्रोफेसर रामरतन उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेला। ..अन्हरिया रातिक दुआरे राधा बेटा-बेटीक संगे प्रोफेसर रामरतन ऐठाम एली। दरबज्जासँ थोड़े फरिक्के रहैथ कि प्रोफेसर रामरतनकेँ जोरसँ बजैत सुनि ठाढ़ भऽ अकानए लगली। मुदा कोनो अनर्गल बात नै सुनि सभ दरबज्जाक आगू एली। दरबज्जा लग चारू गोरेकेँ देख प्रोफेसर रामरतन पुछलखिन। धर्मनाथक परिवार सुनिते उठि कऽ चारू गोरेकेँ आँगन लऽ जा पत्नीकेँ कहलखिन-

"जल्दी हिनका सभकेँ खुआउ। बिना खेने केना जाए देबैन?"

चारू गोरेकेँ चित्रलेखा रोटी-तरकारी खुऔलैन।

प्रोफेसर रामरतनक ऐठामसँ घुमैकाल धर्मनाथ पत्नीकेँ कहलखिन-

"जहिना आशाक बिआहक चिन्तासँ हृदए थरथराइ छल तहिना चाचाजीक आश्वासनसँ मन हल्लुक भऽ गेल। ओ सभ भार लऽ लेलैन।"

हँसैत राधा बजली-

"निर्बलकेँ बल राम होइ छइ। नीकक फल करवनो अधला नै होइ छइ। थोड़े-काल-ले समाजिक परिवेशमे भाइयो जाइ छै मुदा ओकर परवाह मनुखकेँ नै करैक चाही।"

प्रोफेसर रामरतन दीनानाथसँ बिआहक सम्बन्धमे सभ बात

केलैन। दीनानाथक बेटा एम.ए. कऽ पेट्रोल पम्प चलबैत। एकटा मैक्सी, भाड़ामे सेहो चलबैत। खेत तँ बहुत नहि, मुदा पाँच कोठरीक पक्का मकान आ घराड़ियो नमगर-चौड़गर। दीनानाथ हिन्दुस्तान मोटर कम्पनी कलकत्तासँ रिटायर भऽ गामेमे लेथ मशीन चलबैत। अपने पुरान मकेनिक। आशा आ श्यामक बीच बिना दहेजक बिआह पक्का भऽ गेल।

बिआहसँ पहिने समाचार पसैर गेल। रघुनाथक कानमे समाचार पहुँचल। समाचार सुनि एहेन चोट लगलैन जे एकाएक अचेत भऽ गेला। होश होइते सोचए लगला। एक दिस प्रोफेसर रामरतनक अगुआइमे बिआह होएत जे पुश्तैनी दुश्मन। दोसर जमीन्दारीक ठाठ-बाठकेँ पानिमे धर्मनाथ फेक रहल अछि! ओछाइनपर पड़ल रघुनाथ पत्नीकेँ कहलखिन-

“जइ आशासँ धर्मनाथकेँ पढ़ेलौं ओ सभ पानिमे चलि गेल!”

पत्नी पुछलकैन-

“किए एते करुआएल छी?”

“बोलीए-टा करुआएल अछि, होइए जे लोढ़ीसँ कपार फोड़ि मरि जाइ!”

“एना बताह जकाँ किए बजै छी?”

“हम बताह नइ छी, करेजमे चोट लगल अछि। एक क्षण ऐठाम रहब पहाड़ बुझि पड़ैए। जाबे धर्मनाथ रहत, हम ऐ घरमे नइ रहब। चलू, कल्हिए दुनू परानी काशी। ओत्तै रहब। जखन बाप-दादाक प्रतिष्ठाकेँ पानिमे फेक देलक, तखन जीबिये कऽ... ।”

“बड़ीटा दुनियाँ छै, नै हरिअर गाछ भेटत तँ सूखलो गाछ तँ भेटबे करत। ओतै रहब।”

पतिक बात सुनि पत्नीक मनमे एलैन, बीचमे हम की कऽ सकै छी। माथपर दुनू हाथ दऽ ओसारपर बैस गेली। दुनू आँखिसँ नोरक टघार चलए लगलैन। असकरे रघुनाथ ओछाइनपर पड़ल बड़बड़ाइत रहला।

बड़बड़ाइत-बड़बड़ाइत बोम फाड़ि कानए लगला। रघुनाथक कानब सुनि चारूकातसँ लोक दौगल आएल। डॉक्टर बजौल गेल। जाँचि कऽ डॉक्टर कहलकैन-

"दिमागक नस फटि गेलैन। अखने लहेरियासराय लऽ जैयौन।"

गाममे हल्ला भऽ गेल जे रघुनाथ बाबा मरि गेला।

जनिजाति सभ अपनामे गप्प करैत जे रघुनाथ बाबाकेँ भूत लगि गेलैन..! नवकी कन्या सभ बाजए लगली-

"बाबाकेँ चुड़ीन लगि गेलैन..!"

धिया-पुता सभ थपड़ी बाजा-बजा नचबो करैत आ बजबो करैत-

"बाबा मुइला पुड़ी-जिलेबीक भोज खाएब।"

❑ साभार : अर्द्धांगिनी

कथाक्रम : पंचदेव (1-100)

एक तम्मा सिदहा
एक घोंट पानि
करतब
पहाड़क बेथा
उदय-प्रलय

खेतक बँटवारा
पैंतीस साल पछुआ गेलौं
माघक चाह
घबाह ट्यूशन
चोर-सिपाही

उरीन
गुणहीन
बड़की माता
पोखला कटहर
राकशे रहि गेलौं

मुफतिया माल
हेराएल जिनगी
करिछौंह मुँह
कियो ने पुछैए
अँगनेमे हेरा गेलौं

वर्थ डे
सजल स्मृति
सेहन्ता
धोखा
एक मुठी घास

डुमैत जिनगी
हूसि गेल
ठेलाबला
जीविका
धर्मनाथ

किरदानी
भरमे-सरम
धोखा केतए भेल
मीनी भ्रष्टाचार
सोमनाकाका

पटियाबला
रिक्साबला
पसेनाक धरम
दूधबला
केना जीब?

सझिया खेती
सतभैंया पोखैर
दनियाँ डाबा
अर्जुन रोग
दोसराइत

उकड़ू समय
अवाक
कलंक : 1
बताहे बताह बनौलक
भैयारी हक

केकरा-ले केलौं
केकरो कियो ने
टुटली मरैया
बगबाइर
अपन मन अपन धन

एक धाप जमीन
भैयारी
साझी
सूदि भरना
सीमा-सरहद

चुनवाली
रेहना चाची
बुधनी दादी : 2
पुरनी नानी
एकबोलिया दादी

लछनमान
बिटगरहा
गलफूलू
लाही
पल भरि

छातीक हार
कोढ़िया सरधुआ
पहपैट
भोरक सपना
खोंटकर्मा

गपक पियाहुल लोक
धरमूदासक अखड़ाहा
हमरा नीक नहि लगैए
कर्ज : 1
आब नइ आगि लगैए?

घूर

एगच्छा आमक गाछ

प्रीगर शत्रु

दहेजुआ गाए

गठूलाक गारि

गण्डा

अब-तब

झूठे

उजगी

जेना हाथी रही

कनी हमरो सुनू

नोकरिहारा

अनका बेर ओंघी

लगबे ने कएल

ओ दिन

पान पराग

फोंक मकड़

झकास

ठोररंगू

हकार

ओझरी

दोती बिआह

कचहरिया रोग

नटकिया गति

भारीपन भार बनि गेल

दिन घटि गेल

पछताबा

परिवारक प्रतिष्ठा

पागलखाना

खाए चाहैए

गामे उपैट गेल

खतियाएल घर

किछु ने फुरैए

तिलकोरक तरुआ

पटोर

बेटाक चलैत

उग्रघारा

बेटीक कुभेला

दोहरी हाक

खिलतोड़

बापक चलैत
गाम बिसैर गेल
ठकहरबा
समैयक बेरबादी
न्याय चाही

रिजल्ट
बाल बोध
अपन गारि अपन दुआरि
सरही सौबजा
अउतरित प्रश्न

पनियाहा दूध
कन्हा भँट्टा
फलहार
गावीस मोइस
निनिया देवीक आराधना

कनियाँ-पुतरा
मानसरोवर यात्रा
गामक शकल-सूरत
मितक प्रयोजन
चैन-बेचैन

पाइक इज्जत
माघक घूर : 1
मधुमाछी
मति-गति
नैहराक धाड़

माघक घूर : 2
चहकल विचार
राक्षसक झड़
सद्विचार
पोखरिक सैरात

मनकमना
कटौज
किछु ने
हथियाएल खुरपी
झुटका विदाइ

खुदियाएल
गलती अपने भेल
बत्तु
असिरवाद उलैट गेल
उड़हैड़

जिगेसा
लेहाज
जानक मोल
समर्पण
स्तब्ध

भोरक झगड़ा
शालीनता
पान
पवनक विवेक
हरवाहि

समरथाइक भूत
समता
सुखाएल सूरत
खजाना
मौसी

कर्ज : 2
टुटल मनक जुटान
ऐँठ साड़ी
अस्तित्वक समाप्ति
जाति नहि पानि

विदाइ
कर्तव्यपरायन सुगा
निशाँ
दान-दैछना
माइक वचन

मथाहाथ
पाइक मोल
गंजन
नमहर फेरा
अपन काज

बेटपन
उमेद
एकोटा ने
कथनी नै करनी
मुसाइ पण्डित

घरवास
भूल
बत्तीसोअना
पुरनी भौजी
अर्द्धांगिनी

पेटगनाह
गंगा नहेलौं
बकठाँइ
गुलेती दास
खर्च

डॉक्टर हेमन्त
मनुखक मूल्य
तीन जुगिया भाय
आश्रम नहि सोभाव बदली
मायराम

शुभचिन्तक
विधवा बिआह
वैष्णवी भगवती
प्रेमी
शंका

मुइलो बिसेबैन
प्रतिभा
केतौ नै
हमर कोन दोख
असगरे

डीहक बटबारा
मूलधन
छूआ
लफ साग
नहरकन्हा

अपन सन मुँह
पाप आ पुण्य
चोरक चोरबती
मातृभूमि
कटा-कटी

हरदीक हरदा
बेरपर
झगड़ाउ-झोटैला
फॉगु
बुड़िबकहा बुड़िबक बनौलक

उलबा चाउर
पतझाड़
धरम काँट
तिलासंक्रान्तिक लाइ
कठफल

असहाज

बाबा बेलेश्वरनाथ

भौँटक गहमी

जेतए जे हौउ

नौमीक हकार

एकतीस मार्च

अगिलह

स्वर्ग आ नर्क

पीरारक फड़

मनकेँ फुसलबै छी

अकास दीप

माघ नहाइले जाएब

अतहतह

चौरचनक दही

तेतर भाइक कविता

अपन रोपल गाछी भुताहि

डभियाएल गाम

अखरा-दोखरा

गाछपर सँ खसला

सोनाक सुइत

बेटीक लिलसा

पुरान साड़ी

अभिनव अनुभव

अड़िकट्टा चोर

उझट बात

बहिन

मर्माहत

अलपुरिया बरी

दुधियाएल बरखा

चोरूक्का झगड़ा

त्राहि-कृष्ण

संकट

काँच सूत

बीरांगना : 2

सोग

विघटन

बगदल गाम

कलंक

उनटन

विद्रूताक मद

क्रान्तियोग | अनेरुआ बेटा
पाही पट्टी | कछमछी
गोहाइर | समदाही
मरियाएल मन | वारंट
मदैत नै चाही | एकाग्रचित

बोनिहारिन मरनी | गलगर भैंस
आशापर पानि पड़ल | प्रवल इच्छा
बुढ़िया दादी | अधखरूआ
बाबी | मोहरा
बुधनी दादी : 1 | भँसियाएल बाल-बोध

क्रियाशील | दूटा पाइ
समझौता | अपने केलहा
रत्न गमेवाक दुख | समुद्री विद्या
भाइक सिनेह | बीरांगना : 1
हारि | अनुशासन

जाम | बिहरन
विदाइ-दैछना | हारि-जीत : 1
टाइपिस्ट | अपसोच
गजपट खेती | अपन पुरखाक डीह
सुआद | खलओदार

पढ़ल सुगा बौक
गेल माघ उनतीस दिन बाँकी
मान
बालमण्डली
नीक बोल

कियो ने
स्वरोजगार
झिसीक मजा
लतियाएल जिनगी
सजमनियाँ आम

त्रिकालदर्शी
सड़ल दारीम
बटखौक
स्मृति शेष
बिसवास

हाथी आ मूस
गामक बान्ह
पनचैती
भबडाह
दूरी

गामक मुँह फेर देखब
गुड़ा-खुद्दीक रोटी
चौकीदारी
देव उठान
अनदिना

सुमति
आशापर पानि फेर गेल
चर्मरोग
केतौ ने रहलौं
मुँह-कान

बाबाक बाग-बगिया
पुरस्कार
फुसियाह
गामक सुरता
कचोट

जेकर चुन तेकर पुन
एते दिन अपना-ले आब अनका-ले
रमैत जोगी बोहैत पानि
पनचैती पनपना गेल
जेठुआ गरदा

खसैत गाछ
केते लग केते दूर : 2
कुघाटक मृत्यु
ओऽ होऽ होऽ हूसि गेल
मुड़ियाएल घर

उचितवक्ता
हारि-जीत : 2
हँसीएमे उड़ि गेलौं
मनोरथ
धरती-अकास

विचार हेरा गेल
घर तोड़ि देलिऐ
आजुक जिनगीक आइ परीछा
दोहरी मारि
धुर बुड़ि तोरा बजै ने अबै छौ!

डकरा हाल
सीरक गाछ
परतीहा खढ़
गरदैन कट्टा बेटा
कर्जखौक

सुरता
सगहा
पकिया चेला
अनगढ़ चेतना
धोतीक मान

चुप्पा पाल
जन्मतिथि
दियरबा-भैंसुर
फज्झैत
भुतलग्गू आकि भविसलग्गू

सिरमा
मनुखदेवा
अप्पन-बीरान
सुभिमानी जिनगी
मरूभूमि

मइटुग्गर
आने जकाँ
उमकी
मुँहक खतियान
ओसार

सरोजनी
सुभद्रा
देखल दिन : 1
पड़ाइन
चास-बास दुनू गेल

बेटी हम अपराधी छी
भोलानाथ बाबा
घटक बाबा
इजोरिया राति
भँसैत नाह

शम्भुदास
शिवजीक डाक-बाक्
सजाए
छुटि गेल
कनफुसकी

फाँसी
गति-मुक्ति
बजन्ता-बुझन्ता
अप्पन हारि
कोसलिया

मुसहैन
बिसाँढ़
मत्हानि
तेरहो करम
बात-कथा सुनौलक

बेटीक पैरुख
गैत-वीध
बेवहारिक
ठका गेलौं
साए कच्छे

करिछौन लाली
बलजोर
गति-गुद्दा
कलम हानि कऽ
अकाल

भैंटक लावा
डंका
काल्हि दिन
इमानदार घूसखोर
सनेस : 1

बेर परहक भदवा

केलवाड़ी

हँसैत लहास

बलधकेल कटौज

कान फुटल कप

सड़क-कातक खेत

सनेस

छोटका काका

कुकुरपन

हमर बाइनिक विचार

आइ एम शॉरी

देखल दिन : 2

मेकचो

कामिनी

संगी

ठकुआएल भुसवा

बपौती सम्पैत

दादी-माँ

कचहरिया भाय

एक दिन

५-५ टा कथाक १०० संग्रहक ई पंचदेव शृंखला मैथिलीमे पॉकेट-बुक्सक कमीकेँ पूर्ण करत। जतेक पन्ना, ततेक दाम, मोटामोटी दस-दस पन्नाक कथा। से पढ़ैयोमे सुभितगर आ कीनैयोमे सस्ता। एक उखड़ाहामे एकटा पॉकिट बुक्स खतम भऽ सकए, से साएगो पोथी साए उखड़ाहाक खोराकी भेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक कथा-संसारसँ बीछल ऐ सभ रचनाक विषय-वस्तु अहाँक सामाजिक ज्ञानकेँ मोनो पाड़त आ बढ़ेबो करत आ अहाँकेँ सामाजिक प्राणी हेबाक बोधो कराएत। अहाँकेँ अधिकारक संग कर्तव्यक स्मरण कराएत, सरोकारी बनाएत। आ ई सभ मनोरंजनक संग भेटत। मैथिलीक ई पहिल पॉकेट-बुक्स सीरीज स्वागत योग्य अछि। **-गजेन्द्र ठाकुर**

जगदीश प्रसाद मण्डलजीक रचना संसार : 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता- गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर-नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक, 71. दिवालीक दीप, 72. अप्पन गाम- लघु कथा संग्रह।



पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452

